आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" फरवरी 2022

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 40
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –23 । अंक–02 । माघ/फाल्गुन मास । फरवरी 2022

ॐ सरस्वती नमस्तुभ्यं
वरदे कामरूपिणि।

विद्यारम्भं करिष्यामि
सिद्धिर्भवतु मे सदा॥

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुख-पत्र

द्वितीय पुण्यतिथि

चलते-चलते अनवरत यह जिन्दगी, तपते हुए रेत पर अतीत के।
आत्महीन हो गई कुछ इस तरह, शब्द खो गए ज्यो किसी गीत के।।
सप्त स्वरी वीना मृदु स्नेह की, टूट गई तार - तार हो गई।
रोशनी की एक किरण की खोज में, जिन्दगी सघन तिमिर में खो गई।।
- यतीश राज

जन्म
26 नवम्बर 1958

गौलोक गमन
30 जनवरी 2020

स्व. श्री यतीश चतुर्वेदी (राज)

(सुपुत्र स्व. अंगूरी देवी एवं स्व. भोजराज 'मानव')
फतेहपुर करखा (शिकोहाबाद/लखनऊ)

श्रद्धावनत

पत्नी : श्रीमती मंजू
पुत्र-पुत्रवधू : दिवस - गीतिका चतुर्वेदी
पुत्री - दामाद : दिव्या - अभिषेक

श्री विजय - श्रीमती रजनी (आगरा)
श्री मनोज - श्रीमती रीता (आगरा)
श्री प्रशांत, श्री परिजात, श्री अभिजात
श्री गोपाल, श्री अंकुर

एवं समस्त तिवारी परिवार

पता : ई - 2195, राजाजीपुरम, लखनऊ - मो. : 9918708090

(र.क्र. 2022/877)

पुण्य स्मरण

जन्म –
11-07-1927

वैकुण्ठ गमन
28.02.2021

श्री कुंदन लाल चतुर्वेदी

सुपुत्र : स्व. श्री परशुराम चतुर्वेदी – स्व. श्रीमती भैरों देवी चतुर्वेदी
(होलीपुरा/मथुरा/दिल्ली)

शोकाकुल

पुत्र-पुत्रवधू	–	डॉ.प्रदीप चतुर्वेदी – श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी
पुत्रियाँ	–	श्रीमती कामिनी, श्रीमती ममता, अर्चना, प्रतिभा
दामाद	–	विपिन चंद्र चतुर्वेदी (तरसोखर/पुणे)
		कमलेश चंद्र पाण्डे (मैनपुरी/नोयडा)
नाती/नातिन	–	अपूर्व, श्रेया

एवं समस्त मंडी परिवार होलीपुरा

निवास : 65 जगन्नाथ पुरी, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
फ्लैट नं. 4/2, तीसरी मंजिल, एम.एस. फ्लैट,
शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली – 110003

(र.क्र. 2022/879)

हार्दिक आभार

चिरंजीव अच्युत

सुपौत्र : स्व. श्रीमती राजकुमारी - स्व. श्री विनोद चन्द्र चतुर्वेदी
दोहित्र : स्व. श्रीमती सावित्री - स्व. श्री शैलेन्द्र पाठक
सुपत्र : श्रीमती सुमति - श्री अजय चतुर्वेदी

संग

सौ. भूमिका

सुपौत्री : श्रीमती प्रभा चतुर्वेदी - स्व. श्री विनोद चतुर्वेदी
दोहित्री : स्व. श्रीमती रतन चतुर्वेदी - स्व. श्री हरिद्वारीलाल चतुर्वेदी
सुपत्री : श्रीमती ज्योती चतुर्वेदी - श्री राजीव चतुर्वेदी
के विवाह में गरिमामयी उपस्थिति एवं प्रेक्षित
शुभकामनाओं के लिए
सभी स्नेहिल जन का हार्दिक आभार

शुभेच्छु
अजय चतुर्वेदी - सुमति चतुर्वेदी
एवं समस्त भरत स्मृति परिवार

(र.क्र. 2022/825)

Nirmala Construction
COMPANY

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी
गवर्नमेंट रजिस्टर्ड् कांट्रैक्टर

Akshay Choubey
Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech - Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)

Bazariya Ward No.1, Jawalamai Chouraha, Damoh(M.P.) -470661

+91 8770955872
+91 8602266219

- किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करे। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करे!
- हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !

Private Construction Project

Government Construction Project

दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे(बगियावाले) , पुत्र - विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र,स्व. नीरज चौबे।

भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

(र.क्र. 2022/851)1/6

बसंतोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (नई दिल्ली)
उपसभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल), श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
सचिव : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
सह सचिव : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर) श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी (दिल्ली)
संपादक चतुर्वेदी चंद्रिका : शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

एवं समस्त कार्यकारिणी, महासभा

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
बसंत	11
बसंत ऋतु	16
भोजशाला	19
शांत रहें और तनावमुक्त रहें	21
परीक्षाएं इतनी मुश्किल भी नहीं	22
इनाम	23
भाषाओं का विलोपन	24
गुग्गल-एक महत्वपूर्ण औषधि	28
शाखा समाचार	30
समाज समाचार	32
शोक समाचार	34

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अंक 02
फरवरी 2022, वर्ष - 23

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

बंधुवर पालागन,

विगत वर्ष की तरह इस वर्ष 2022 में भी महासभा द्वारा वार्षिक कैलेंडर का प्रकाशन किया गया। इस कैलेंडर में देश के सर्वोच्च सम्मानों में से एक पद्मभूषण और पद्मश्री प्राप्त बांधवों के चित्र प्रकाशित कर हम गौरवान्वित है। इसी के साथ समाज के निवृत्तवान व वर्तमान न्यायाधीशों के चित्रों का भी प्रकाशन किया गया है। विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी इस कैलेंडर को आपका स्नेह आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

महासभा के 100 वर्ष के इतिहास का कार्य पूर्ण हो चुका है। इस दुष्कर कार्य को भाई भरत जी (रिसड़ा) ने बहुत मनोयोग से पूर्ण किया है। 15 फरवरी 2022 तक इसमें विज्ञापन प्रदत्त शुल्क दरों के अनुसार दिए जा सकते हैं। 100 वर्षों के इतिहास का प्रकाशन महासभा द्वारा आप सबके सहयोग से किया जा रहा है।

आप सभी के सहयोग से महासभा की जनहित की अन्नपूर्णा योजना में वार्षिक खर्च 8,65,800 रुपए आता है। इस मद में अभी तक 8,03,977 रुपये एकत्र हो चुके हैं। हैदराबाद शाखा सभा द्वारा बसंत पंचमी के मकर संक्रांति के अवसर पर 70,001/- रुपए अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए।आपका बहुत बहुत आभार। यह एक अनुकरणीय पहल है। भविष्य में भी आप सभी का सहयोग प्राप्त होता रहेगा, ऐसी हम आशा करते हैं।

करोना की तीसरी लहर अपने चरम पर है। अभी हम सब को सावधानी व सतर्कता की आवश्यकता है। हम आशा करते हैं कि जल्द से जल्द सब ठीक हो जाएगा। हमें इस महामारी से मुक्ति मिलेगी और हम शीघ्र फिर मिल सकेंगे।

– शुभकामनाओं सहित

आग्रह

महोदय, हर्ष का विषय है कि चतुर्वेदी महासभा ने अपनी यात्रा के सौ वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इस वर्ष महासभा अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रही है। कोरोना महामारी के कारण सभा वृहद समारोह तो आयोजित नही कर सकी है, लेकिन अपने शताब्दी वर्ष में महासभा द्वारा वर्चुअली नियमित कार्यक्रम किये जा रहे है। इसी सन्दर्भ में कार्यसमिति ने शताब्दी वर्ष को अक्षुण बनाने हेतु एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है। स्मारिका में सभा की स्थापना से लेकर अब तक की यात्रा का पूरे लेखा जोखा के साथ ऐतिहासिक एवं कीर्ति परख आलेख भी समाहित किए जायेगे।

अतःआपसे निवेदन है कि स्मारिका में निम्न दर पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के नाम चैक द्वारा भुगतान कर अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन दिनाँक 15 फरवरी 2022 (वसंत पंचमी) तक देने की कृपा करे।

खाता विवरण : श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा बचत खाता न.1006238340 आई एफ एस कोड- CBIN0283533 सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ब्रांच- आनंद विहार,दिल्ली

विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-
द्वितीय एवं तृतीय कवर	20000/-
रंगीन फुल पृष्ठ	11000/-
श्वेत श्याम फुल पेज	8000/-
श्वेत श्याम हाफ पेज	5000/-
श्वेत श्याम चौथाई पेज	3000/-
शुभकामना चार लाइन	1100/-

संपर्क :

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी(सभापति) 9873395001
भरत चतुर्वेदी (संयोजक) 7059086775
मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी(मंत्री) 09871170559
शशांक चतुर्वेदी (संपादक) 09826086879

संपादकीय

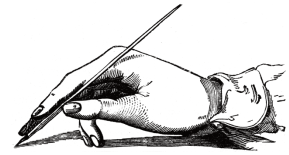

बसंत के आगमन पर ठंडक अपने सारे सितम कर अपने ढलान की ओर अग्रसर होने लगती है इस वर्ष पहाड़ों पर बर्फबारी अधिक होने की वजह से भीषण ठंड की तीव्रता का एहसास अच्छी तरह से करवा गई बसंत का मौसम ठंड से राहत, फसलों के आगमन, फागुन की मस्ती, रंगों अदभुत छटा व होली की खुमारी, उमंग, उल्लास का सूचक होता है। कवि ने अपने सुंदर शब्दों की माला को सजाते हुए ठीक कहा हैः

आ गया बसंत है, छा गया बसंत है,
खेल रही गौरैया सरसों की बाल से,
मधुमाती गन्ध उठी अमवा की डाल से,
अमृतरस घोल रही झुरमुट से बोल रही,
बोल रही कोयलिया।
आ गया बसंत है, छा गया बसंत है,
नया-नया रंग लिए आ गया मधुमास है,
आंखों से दूर है जो वह दिल के पास है,
फिर से जमुना तट पर कुंज में पनघट पर,
खेल रहा छलिया।
आ गया बसंत है छा गया बसंत है,
मस्ती का रंग भरा मौज भरा मौसम है,
फूलों की दुनिया है गीतों का आलम है,
आंखों में प्यार भरे स्नेहिल उदगार लिए,
राधा की मचल रही पायलिया।
आ गया बसन्त है छा गया बसंन्त है।

शिशिर ऋतु के चलते ही बसंत ऋतु दस्तक देने लगती हैं। इस मौसम की, मादकता से हमारा स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। आयुर्वेद की भाषा में शीत ऋतु में संचित कफ बसंत ऋतु में सूर्य की किरणों के प्रभाव से कुपित हो सकता हैं। अतएव कफ प्रधान एवं वात-पित अप्रधान होता है,जिसका प्रतिफल होता है कि कफ, वात -पित के साथ संयोग कर स्वास्थ में अवरोध उत्पन्न करने लगता है। अतः इस मौसम परिवर्तन के दौर में अपना व अपनों के स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

विगत अंक में चित्रा जी की चाय, दिलीप जी की हल्दी, उषा जी की बेजुबान किताबें, संपूर्ण भारत में मकर संक्रांति के साथ साथ नववर्ष पर कविता का एक संक्षिप्त संग्रह को आपका प्यार, आशीर्वाद व सराहना मिली। आप सभी का बहुत बहुत आभार।

पत्रिका के इस अंक में वसंत ऋतु के आगमन पर कुछ कविताओं का गुलदस्ता व चित्रा जी, भोपाल द्वारा वसंत पर रोचक जानकारी औषधि गुग्गुल पर दिलीप जी, लखनऊ द्वारा विशेष जानकारी दी जा रही है। परीक्षा के इस मौसम में बच्चों की मानसिक स्थिति देखते हुए डॉ. अलका जी, मुंबई विशेष सलाह के साथ ऊषा जी, भोपाल द्वारा भोजशाला पर जानकारी परक लेख दे व रचना जी योगा की सलाहें दे रहे है। राष्ट्रीय स्तर पर एक लघु कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए ऊषा जी, भोपाल को बहुत-बहुत बधाई। उनकी उक्त पुरस्कृत कहानी हम इस अंक में आपके समक्ष रख रहे हैं। आशा है आपको हमारा यह अंक पसंद आएगा व आपका आशीर्वाद हमारे लेखकों को हमेशा की तरह प्राप्त होगा। जिससे उनका उत्साह वर्धन होगा। कोरोना की एक और लहर अपने चरम के नजदीक है। हम लोग सावधानी और सतर्कता रखें। अपना व अपने परिवार का ख्याल रखें, सुरक्षित रहें।

- शशांक चतुर्वेदी

< चतुर्वेदी चन्द्रिका >

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

ऋतुराज बसंत

ऋतुराज बसंत

ऋतुराज ऋषि बसंत का शुभागमन हुआ
वैदिक अरण्य सा पवित्र आज मन हुआ।

उनमुक्त मन से बांटता सुगंध संपदा
इक संत-सा समीर का ये आचरण हुआ।

फिर सिद्ध साध्वी-सी लगी है ऋतंभरा
मधुरिम धरा का पीतवर्णी आवरण हुआ।

सेमल से रेशमी है नरम छंद गंध के
रसवंति कामना का मधुर व्याकरण हुआ।

मन!! मौन की उपासना का बोधिवन हुआ
तब अर्थवान तीर्थजल का आचमन हुआ।

बसंत गीत गा रही सुमंगला हवा
धरती के रूप का शिवम् अनावरण हुआ।

– **पं. सुरेश नीरव,** गाज़ियाबाद

-0-

गीत

– **डॉ अपर्णा चतुर्वेदी प्रीता**

खेत-खेत सरसों है फूली,
कनक-चना,अरहर भी फूली।
कनक हँसी उमगाय उठी है,
ऋतु बसन्त इतराय उठी है।

गाँव- गाँव सब एक हो रहे,
ऐसी पावन ज्योति जगी है,
'जय जवान' और 'जय किसान' की,
घर-घर में इक टेर उठी है,
चलो, चलें हम हिल- मिल गायें,
धरती -माता विहँस उठी है,
खेत- खेत सरसों है फूली,
ऋतु बसन्त इतराय उठी है।।

आखर-आखर सब कोई बाँचे,
जलधारा की सौंध उठी है,
राह बनी हैं रोशन आँखें
सँग में फिर आवाज़ उठी है,
रहे न कोई भूखा जग में,
मन में ऐसी आस जगी है,
खेत-खेत सरसों है फूली,
ऋतु बसन्त इतराय उठी है।।

ऐसी निराली शान ' निराला',
राम-शक्ति की पूजा वाला,
भर दे झोली में मतवाला,
ऋतु बसन्त का काव्य निराला
प्रीता कवि महाप्राण निराला है,
शत शत भावों की है माला
ऐसी पावन ज्योति जगी है
ऋतु बसन्त इतराय उठी है।।

खेत- खेत सरसों है फूली,
कनक-चना अरहर भी फूली।
खनक हँसी उमगाय उठी है,
ऋतु बसन्त इतराय उठी है।।

-0-

बसंत का आगमन

– **श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी,** ग्वालियर

वसंत का आगमन इस बार
लगता है हो रहा दबे पांव
कहीं से भी सुनाई नहीं दे रही
उसकी मादक पदचाप

वह हरियाली, वह फूलों का खिलना
भ्रमरो का गुंजार, तितलियों का मडराना
अब कहीं नहीं दे रहा दिखाई
दूर-दूर दिखलाई देते कंक्रीट के बेतरतीब जंगल

उन में चल रही जो तोड़फोड़
अनवरत चलती है हथौड़े की आवाज
इन सबके बीच कहीं खो गई है
कोयल की वह मधुर आवाज

मधुमास के आगमन का जो देती थी संदेश
जीवन में भर देती थी हर्ष उल्लास
गाड़ियों के कर्कश हॉरन ने
सोख लिया है जीवन का आनंद

भारी बस्ते के बोझ से लदा
मुरझा गया है मासूम बचपन
परीक्षा के तनाव को झेलता
कैसे पहचानेगा मादक बसंत

बस बसंत का एहसास बचा है
कुछ गमलों में या कृत्रिम फूलों में
आज की पीढ़ी भूल गई है
मनाना बसंत पंचमी

अब मनाती है वैलेंटाइन डे
कभी चॉकलेट डे
कभी रोज डे तो
कभी टेडी बियर डे मना कर

मदनोत्सव को मनाती धूम मचाती
उपहारों से पटा पड़ा है बाजार
दिल और दिमाग पर बाजार
हावी हो चुका है

रूठने मनाने का उपक्रम
अब चरम पर है
प्रेम पत्र देने दिलाने की कहानी
अब बरसों हुई पुरानी

छुप छुप कर देखने का रोमांच
अब हवा हो चुका है
अब तो मोबाइल ही देवता है
वही पत्र है ,वही कबूतर

वही सबसे बड़ा ज्ञानी ध्यानी है
जोड़ियां बनाने और बिगाड़ने की
जिम्मेदारी बखूबी निभाता है
ना अब लंबी आहे हैं ना विरह में
आंसू बहाती लंबी रातें हैं

ऐसे बदलते हुए वक्त में
बसंत को ढूंढने
किस छोर तक जाएं
हम कहां तक जाएं।

–0–

लेओ बसंत आयौ

लेओ बसंत आयौ, हाँ जी बसंत आयौ।
लागै कि प्रकृति कौ, आँचर लहरायौ।
लेओ बसंत आयौ, हाँ जी बसंत आयौ।

मंद–मंद मुस्काती, सीतल बयार चली।
बगियन में खिल रयीं, देखौ नवजात कली।
भ्रमर हु मँड़रान लगे, मौसम हु सुहायौ।
लेओ बसंत आयौ, हाँ जी बसंत आयौ।

कोयल की कूक प्यारी, अमुआ की फूली डारी।
पीत रंग भावै सबै, चहक उठे नर–नारी।
कभू ग्रीष्म, कभू सीत, सबकूँ लुभायौ।
लेओ बसंत आयौ, हाँ जी बसंत आयौ।

फागुन आगाज भयौ, भौजिन कौ राज भयौ।
तैय्यारी हौन लगीं, हरस नायँ जाय कह्यौ।
नायँ जान पायौ कोऊ, कौन नैं भड़कायौ ?
लेओ बसंत आयौ, हाँ जी बसंत आयौ।

मन हु बौरान लगौ, अटल बूढ़ो गान लगौ।
मौसम की रंगत ते, सबमें ही फाग जगौ।
सीत कौ समझ अंत, मन हरसायौ।
लेओ बसंत आयौ, हाँ जी बसंत आयौ।

– अटल राम चतुर्वेदी

–0–

एक नया गीत

गोकुल से बरसाने तक है केवल राधा राधा
चलो बाँट ले आपस में मिल
सुख–दुःख आधा–आधा

गोकुल से बरसाने तक है
केवल राधा–राधा
कुन्ज गली से निकलें
जमुना के तट पर हो आएं
अपने से जब मिलना हो तो
थोड़ा सा छुप जाएँ
खुलकर मिलने–जुलने में है
आख़रि कैसी बाधा ?
रास रचैया,धेनु चरैया
सोते में भी जागे
राधा से ही नहीं जुड़े हैं
मीरा से भी धागे
ख़ुद का आराधन कर बैठे,
जब तुमको आराधा
क़दम क़दम गोकुल वृंदावन
मथुरा की हैं गलियाँ
सूरदास की आँखों को भी
दी हैं दीपावलियाँ
जितना मोरपंख सा जीवन,
उतना ही है सादा

– **विनीता चतुर्वेदी,** कमतरी/ देहरादून

–0–

माँ शारदे एवं बसन्त

पीताम्बर को धारण कर
देखो बसन्त आया
कोहरे से आच्छादित धरा
सर्दी से निकली धरा पर भी
कौवनआया
माँ शारदे की वीणा से
झंकृत हुई धरा है
मॉ शारदे तुम्हे नमन है
याचक द्वारे आया है
धानी लहंगा पीली चुनरी
खेतो पे बसन्त छाया है
सुरभित हवा खिलती कलियॉ
प्रकृति पर बसन्त छाया है
रागद्वेष मिटा जीवन के
जीवन में है आनन्द भर
आओ प्रकृति के संग में
हम भी बसन्त को है तिलक करे
पीताम्बर को धारण कर देरवो
बसन्त आया।

– **श्रीमती उषा चतुर्वेदी,** भोपाल

सुहानी भोर

– **श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी,** भोपाल

कली कली है आज तो जागी
सुरम्य प्रसून की भोर है आयी

वसन्त का तो छाया उत्सव
चिड़ियों ने मचाया कलरव

काली निशा की घोर निराशा
रवि तो आया ले कर आशा

वसंत ऋतु का हुआ आगमन
पल्लवित हो गये नूतन पात

पुष्प पुष्प हैं विभन्न रंग के
उनके ऊपर चित्र पतंगे

दिनकर जागा सुबह हुई
जागी प्रमुदित होकर वसुधा

भोर हुई अब जागा मधुवन
बंसी बज रही अब तो कानन

जीवन में भर गया आलोक
अब ना करो किसी का शोक

वसंत तो हमको सदा सिखायें
वर्तमान जी कर अब तो दिखाये।

–0–

नेता का कैसा हो वसंत

–**डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी, द्वारका,** नई दिल्ली

नेता का कैसा हो वसंत
(स्व. सुभद्रा कुमारी चौहान से क्षमा याचना सहित)

दिल्ली से अब आ रही पुकार
बह रही चुनावों की बयार
होगी अब किसकी जीत हार ,
यूपी ,कर्नाटक या बिहार
सब पूछ रहे हैं साधु संत
नेता का कैसा हो वसंत?

भगवा,पीला और हरा रंग ,
झंडे भरते मन में उमंग
फड़के हैं सबके अंग अंग
सोशल मीडिया में मची जंग,
कुर्सी है जिसका आदि अंत
नेता का कैसा हो वसंत?

चमचों ने छेड़ी मधुर तान
मंचों पर दिखता घमासान,
अब धरती हो या आसमान
टिकटों में ही अटकी है जान
अब यही समस्या है ज्वलंत
नेता का कैसा हो वसंत?

जाति कुनबों में बंटे लोग,
लूटो खाओ बन गया रोग,
नीचे से ऊपर बंटे भोग
बाहु बालियों से बने योग
संसद कैसे पहुंचें तुरंत
नेता का कैसा हो वसंत?

दीवाली होली मचे फाग
बारह महीने ही चले राग
गुंडे अपराधी उठो जाग
नेतागिरी से धुले दाग
मंत्री बन जा, मौके अनंत
नेता का कैसा हो वसंत?

जितने घोटाले हों प्रचंड
नेता को मिलता नहीं दंड,
चेले भी करते हैं घमंड
दुश्मन हो जाए खंड खंड
खिलते पूरे बत्तीस दंत
नेता का कैसा हो वसंत?

अब बॉलीवुड के गीत नहीं
भ्रष्टाचारी संगीत नहीं
जनता में बनते मीत नही
बिन निर्वाचन के जीत नहीं,
अब इन्हें बताए कौन ? हंत!
नेता का कैसा हो वसंत?

–0–

..... बसंत ऋतु आई

देखो देखो बसंत ऋतु आई,
अपने साथ खेतों में हरियाली लाई।
किसानों के मन में खुशियां छाई,
घर–घर में है हरियाली छाई।
हरियाली बसंत ऋतु में आती हैं,
गरमी में हरियाली चली जाती है।
यही ऋतु चक्र चलता रहता है।
नहीं किसी को नुक्सान होता है।
देखो देखो बसंत ऋतु आई,
घर–घर में है हरियाली छाई।
भव्या चतुर्वेदी (कक्षा ८) कोलकाता

–0–

बहे बयारिया मधुरम मधुरम

उड़ उड़ कर अम्बर से जब मंद बयार धरती पर आता है।
देख के कंचन बाग को अब
भ्रमरा धीरे से मुस्काता है।
फूलों की सुगंधित कलियों,
पर जा के प्रेमगीत सुनाता है।
गेंदा गमके महक बिखेरे उपवन को आभास दिलाए,
बहे बयारिया मधुरम् मधुरम।
प्यारी कोयल जो गीत गुनगुनाए,
ऐसी बेला के उत्सव में वाग्देवी भी तान लगाए।
आयो बसंत बदल गई ऋतुए,
हंस हंस यौवन श्रृंगार संजाए।
बहे बयारिया मधुरम मधुरम।।

– **ओशी नलिन,** (नोएडा)

–0–

आयी बहार बिहार में..

अंग अंग में उमंग आज तो पिया बसंत आ गया,
देख खेत मुस्करा रहे हरे हरे,
डोलती बयार नव सुगंध को घेरे,
गा रहे विहग नवीन भावना भरे,
'प्राण', आज तो विशुद्ध भाव प्यार का हृदय में समां गया।
खिल गया अनेक फूल पात से चमन,
झूम–झूम कर भी गीत गा रहा गगन,
यह लजा रही उषा कि पर्व है मीत मिलन,
आ गया समय बहार का बिहार में नया–नया,
अंग अंग में उमंग आज तो पिया बसंत आ गया......

– **सुगंधा प्रशांत,** (लखनऊ)

–0–

जल्दी है

– **मोनिका चतुर्वेदी,** लंदन

आज जल्दी किस बात की है पता नहीँ बस जल्दी है।
घर में है तो काम की जल्दी है
बाहर है तो घर जाने की जल्दी है
बच्चा हुआ तो पढ़ाने की जल्दी है
बड़े है तो बुढ़ापे की जल्दी है
कहाँ जाना है क्यों जाना है जल्दी
पता नहीं बस जल्दी है ।
किसी का मेसिज तो पड़ने की जल्दी है
मेसिज पड़ा तो मेसिज आगे बढ़ाने की जल्दी है ।
गाना सुनना चालू किया तो अगला गाना बढ़ाने की जल्दी है
किस बात की जल्दी है क्यों जल्दी है पता नहीं बस जल्दी है
जब छोटे थे तो जल्दी के अलावा सब था ।
दोस्त थे टाइम था और कम भी हो ही जाते थे ।
पर अब तो बस जल्दी है क्यों है पता नन्ही बस जल्दी है
ऐसा लगता है किसी ने टेप रिकॉर्डर में फ़ास्ट फॉरवर्ड का बटन दबा दिया है
सब भागते नज़र आ रहे है कहा जाना है किस बात की जल्दी है पता नहीं बस जल्दी है।

–0–

वसंत आयो

– **डॉ. कुश चतुर्वेदी,** इटावा

पतझड़ तो जाता रहा,
डालों पर मुस्कान ।
चिंतित बूढ़ा पेड़ है ,
कोपल हुई जवान ।
मन तो फागुन सा हुआ,
रग रग देह बसंत ।
शरद करो प्रस्थान तुम ,
अब जाड़े का अंत ।
देहरी पर मग जोहती,
कब आएंगे कंत ?
मन मयूर नाचत फिरै,
द्वारे खड़े बसंत।
आर्दनयन भूखे उदर ,
आशायें निष्प्राण।
हे वसंत ! कर पाओगे
इनका भी कल्याण?।।

–0–

वसन्तोत्सव

– **विजय चतुर्वेदी,** विजय (आगरा)

कहलाता है
प्रकृति का उत्सव
वसंतोत्सव
निजात मिले
बर्फीली हवाओं से
मधु ऋतु में
वसंत ऋतु
रसमय श्रृष्टि का
नवयौवन
फूली सरसों
धरती ने ओढली
पीली चादर
लोहित हुई
वृक्षों की डाली डाली
ऋतुराज में
बौराए आम
कोयल की कुहुक
आया वसंत
लिखता सदा
शीत की अंत कथा
ज्ञानी वसंत

बसंत ऋतु

- श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, बीमाकुंज, भोपाल

बसंत ऋतु एक ऐसी ऋतु है, जिसमें वातावरण का तापमान बड़ा सुखद रहता है। यह ऋतु उत्तर भारत तथा समीपवर्ती देशों की छह ऋतु में से एक है,जो फरवरी-मार्च और अप्रैल के मध्य क्षेत्र में अपना सौंदर्य बिखेरती है। ऐसा माना जाता है कि माघ महीने की शुक्ल पंचमी से बसंत ऋतु का आरंभ होता है। फाल्गुन और चैत्र मास बसंत ऋतु के माने गए हैं। फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास है और चैत्र वर्ष का पहला मास है। इस प्रकार हिंदू वर्ष का प्रारंभ और अंत चैत्र मास से ही होता है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है, मौसम सुहावना हो जाता है। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। आम के पेड़ बोरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के पीले फूलों से भरे दिखाई पड़ते हैं। अतः रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए इसे ऋतुराज भी कहा गया है। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में यौवन आता है उसी प्रकार बसंत इस प्रकृति का यौवन है। जाती हुई सर्दियां, बड़े होते दिन, गुनगुनाती धूप धीरे-धीरे तेज होती हुई काव्य प्रेमियों को सदैव आकर्षित करती है। बसंत ऋतु सदैव ही कवियों की प्रिय ऋतु रही है। जाता हुआ पतझड़, पेड़ों में आती नए पत्तों की कोपले , सुंदर रंग बिरंगे फूल और सरसों के पीले फूलों से लदे खेत देख किसान भी झूम उठता है और अनायास कवि निराला की चंद पंक्तियां याद आ जाती हैं-

आओ – आओ फिर,
मेरे बसंत की परी – छवि निमावरी,
सिहरो, स्वर से भर – भर,
अंबर की सुंदर छवि निमावरी...।
किसी और कवि ने भी लिखा है –

सब का हृदय खिल खिल जाए,
मस्ती में सब गाए ,गीत मल्हार ।
नाचे गाए सब मन बहलाए,
जब बसंत अपने रंग बिरंगे रंग दिखाएं।

बसंत ऋतु आने पर किसान नई फसल पकने का इंतजार करते हैं । सरोवरों में कमल के फूल खिल कर पानी को इस तरह छुपा लेते हैं। जैसे कह रहे हो अपने सारे दुखों को समेट कर जिंदगी के सारे सुखों का आनंद लो। बसंत ऋतु के आने पर लोग बसंत पंचमी का त्यौहार मना कर खुशियां मनाते हैं। इस समय सर्दी का अंत होता है और खुशहाली आ जाती है। इन दिनों मन स्वयं ही कलात्मक हो जाता है, और शरीर को एक नए आत्मविश्वास के साथ कार्य करने की क्षमता प्राप्त होती है। इन दिनों सुबह–सुबह कोयल की मीठी आवाज और रात में चमकते चांद की चांदनी मौसम को सुहावना बना मन को प्रफुल्लित करती है। बसंत ऋतु की शोभा बहुत ही निराली होती है। इन दिनों लोग इसीलिए ज्यादा प्रसन्न होते हैं क्योंकि उन्हें अत्याधिक ठंड और उन कपड़ों से मुक्ति मिल जाती है। इस ऋतु में लोग हल्के सूती वस्त्र और हल्के रंगों के वस्त्र पहनना आरंभ कर देते हैं। शिवरात्रि, होली और बसंत पंचमी जैसे त्यौहार भी इसी ऋतु में मनाए जाते हैं।

किसी बृज के कवि ने भी लिखा है –
आयो बसंत सभई वन फुले,
खेतन फूली सरसों।
हम पियरी भाई श्याम बिरह में,

तो निकसत प्राण अधर सो,
कहौ कोऊ मुरलीधर सो ।
नेह लग्यो मेरो__ ।

बसंत ऋतु के दौरान चारों तरफ एक उत्सव का माहौल हो जाता है। सभी लोग प्रकृति की खूबसूरती को आनंदमय होकर निहारते हैं। एक नई ऊर्जा और नई चेतना के साथ लोग स्वयं को तरोताजा महसूस करते हैं। पुराणों की कथाओं के अनुसार बसंत को कामदेव का पुत्र माना गया है। भगवान कृष्ण ने गीता में बसंत ऋतु का वर्णन करते हुए कहा है कि ऋतु में मैं बसंत हूं। सभी जीवों, पेड़ पौधों को खुशहाली देने वाली बसंत ऋतु की प्रतीक्षा सभी करते हैं। क्योंकि अन्य ऋतुयों में जो कष्ट होता है वह इस ऋतु में सुखद हो जाता है और प्रत्येक व्यक्ति एक नई चेतना और ऊर्जा के साथ खड़ा हो जाता है। बसंत मास के इस असर से प्रसिद्ध फिल्मकार, फिल्मी गीत लेखक और संगीतकार भी स्वयं को अछूत नहीं रख पाएं। बरसों पुराने बसंत संगीत आज हमें सुनाई पड़ते हैं और हम इन गीतों के साथ गुनगुना पढ़ते है–

आई झूम के बसंत, झूमो संग संग ले।।

किसी गीत लेखक ने तो यहां तक लिख दिया है –

पतझड़ सावन बसंत बहार ,
एक बरस के मौसम चार (2)
पांचवाँ मौसम प्यार का इकरार का.........।

वर्ष में छह ऋतु होती हैं शीत– शरद, बसंत, हेमंत, ग्रीष्म, वर्षा और शिशिर। ऋतु ने हमारी परंपरा को अनेक रूपों से प्रभावित किया है। बसंत, ग्रीष्म और वर्षा देवी ऋतु है तो शरद, हेमंत और शिशिर पितरों की ऋतु है। इसी प्रकार बसंत ऋतु के बारे में 5 खास बातें मानी जाती है–

1. अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार फरवरी–मार्च और अप्रैल में बसंत ऋतु रहती है।

2. बसंत को ऋतु का राजा माना गया है। जिस तरह प्रकृति के तत्व जैसे वृक्ष, पहाड़ पशु–पक्षी आदि सभी उस दौरान प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए उससे होने वाली हानि से बचने का प्रयास करते हैं उसी तरह ऋषियों ने भी मानव को सावधानी रखने की सलाह दी है। इस दौरान ऋषियों ने इस ऋतु में ऐसे व्रत–त्योहार बनाए हैं। जिनके करने से मनुष्य स्वस्थ एवं सुखी रहता है।

3. हिंदू धर्म में नए वर्ष की शुरुआत चैत्रमास से होती है। चैत्र और वैशाख मास में यह ऋतु अपनी शोभा और छटा भी बिखेरती है। अंग्रेजी मास के अनुसार यह ऋतु मार्च और अप्रैल में रहती है।

4. इस ऋतु में होली–धूलेड़ी, रंग पंचमी, बसंत पंचमी, नवरात्रि, रामनवमी, नव संवत्सर, हनुमान जयंती और गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाए जाते हैं।

5. इसके अलावा होली–धूलेडी जहां मात्र प्रहलाद की याद में मनाई जाती है। वहीं नवरात्रि देवी मां का त्यौहार है, दूसरी और रामनवमी, हनुमान जयंती और बुद्ध पूर्णिमा के दिन भी महापुरुषों का जन्म हुआ था। बसंत पंचमी और सरस्वती पूजा को लेकर एक किवंदती है। जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना कर उस पर एक निगाह डाली तो उन्हें यत्र तत्र सर्वत्र एक वीराना सा दृष्टिगोचर हुआ। जहां ना कोई उत्साह था ना कोई सुंदरता थी। यह देखकर ब्रह्माजी ने अपने कमंडल से लेकर पृथ्वी पर

जल छिड़का। जल कण के पड़ते ही पेड़ों में एक शक्ति प्रकट हुई, जो हाथों में वीणा लिए बजा रही थी। उस देवी को सरस्वती माँ कहा गया। बसंत पंचमी को हर घर में सरस्वती पूजन होता है। यह पूजा पश्चिमोत्तर भारत, बांग्लादेश, नेपाल तथा कई अन्य राष्ट्रों में भी बड़े उल्लास के साथ मनाई जाती है। कहा जाता है कि बसंत का त्यौहार चीनी लोगों का प्रमुख त्यौहार है। सैकड़ों वर्ष पूर्व चीन में बसंत को नियन कहा जाता था। नियन का अर्थ है भरपूर फसल। हमारे यहां हर त्योहार की कुछ अनोखी परंपरा है। कुछ प्रदेशों में सरस्वती पूजन के दिन बच्चों को पहला अक्षर लिखना सिखाया जाता है। बंगाली परिवारों में इस दिन बच्चों की किताबें कॉपी, कलम आदि माता के चरणों में रख दिए जाते हैं और आज के दिन विद्यार्थी पढ़ाई नहीं करते हैं। उत्तर प्रदेश एवं कुछ प्रदेशों में आज के दिन पट्टी–कलम पूजन की प्रथा भी है। आज के दिन पंडित पट्टी कलम पूजन करवाकर बच्चे की पढ़ाई

लिखाई कर विद्यारंभ का शुभारंभ करा देते हैं।

कुछ प्रदेशों में बसंत पंचमी के दिन पीला भोजन करने का चलन है। जैसे केसर पड़ी खीर, मीठा पीला भात, पुलाव, कढ़ी, घोई, मक्के / बेसन की रोटी, पराठे, पूरी इत्यादि। बंगाल में इस दिन पीला रसगुल्ला राजभोग और पीले छिलके वाला केला अवश्य खाते हैं।

यूं तो बसंत पंचमी को उत्तर भारत का त्यौहार बताया जाता है। खुशियां सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है, सरहद पार भी इसे शिद्दत से मनाया जाता है। बांग्लादेश के शिक्षण संस्थानों में इसे बहुत धूमधाम से मनाते हैं। पाकिस्तान में भी यह त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाते हैं। यहां के पंजाबियों के लिए यह त्यौहार खास होता है। आज के दिन पतंगबाजी खास होती है। इस पतंग उत्सव में जनता बढ़ चढ़कर भाग लेती है। ढाका में ढाका यूनिवर्सिटी और रामकृष्ण मिशन की ओर से यह त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है। यहां भी पट्टी पूजन या स्लेट पूजन की प्रथा है। ढाकेश्वरी मंदिर और ढाका के पुराने इलाकों में इस त्यौहार का उत्साह देखते बनता है। दक्षिण दिल्ली स्थित चिश्ती घराने के चौथे संत हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर बसंत पंचमी के दिन हरी चादर के स्थान पर पीली फूलों की चादर चढ़ाई जाती है। लोग वहां बैठकर बसंत के गाने गाते हैं। इस दिन पंजाब जमीन से लेकर आसमां तक पीली चादर ओढ़े नजर आता है। पंजाब में भी इस दिन काइट फेस्टिवल जोरों पर मनाया जाता है। स्कूल और संस्थानों में संगीत तकनीक विज्ञान और कला से जुड़ी चीजों की पूजा की जाती है इन सब नजारों को देख मन आनंदित हो कि उठता है –

आ गया बसंत है, छा गया बसंत है,
खेल रही गौरैया ,सरसों की बाल से,
मदमाती सुगंध उठी सरसो की डाल से ,
आ गया बसंत है, छा गया बसंत है।

बसन्तः रमणीयः ऋतू अस्ति।

बसंत ऋतु अपने सौंदर्य व उल्लास के कारण विशेष स्थान रखती है। इतनी मनमोहक व उमंग भरी कोई भी ऋतु नहीं होती है। इस मौसम में हमारा प्रिय होली का त्यौहार आता है। जब सभी रंगों और पानी के साथ होली खेलने के द्वारा इस मौसम का आनंद लेते हैं। इन दिनों आप कोयल की कू कू वाले गीत सुनकर सुबह–सुबह आनंदित भी होते हैं। इस ऋतु में कुछ बीमारियां भी जोर पकड़ती हैं। इस समय हमें स्वास्थ्य के प्रति बहुत सजग रहने की आवश्यकता होती है।

1. आयुर्वेद के अनुसार इस सूर्य की तेज किरणों के प्रकोप के कारण शरीर में संचित कफ पित्त दोष प्रकुपित हो जाते हैं। जिसके कारण शरीर की अग्नि मंद हो जाती है, और शरीर में अनेक रोग जैसे भूख कम लगना, सर्दी – जुकाम, पाचन शक्ति कम होना, एलर्जी आदि हो सकते हैं। ऐसे में हमें आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए ।
2. खाना बनाने में तिल का तेल सरसों का तेल अधिक प्रयोग में लें।
3. कफ को कम करने के लिए शहद का प्रयोग ज्यादा करें।
4. भारी भोजन जैसे तले – भुने पदार्थ, खट्टी मीठी चीजों का सेवन कम से कम करें।
5. नहाने में गुनगुने पानी का प्रयोग करें।
6. व्यायाम और टहलना अपनी दिनचर्या में शामिल करें।
7. बसंत ऋतु में दिन में सोना वर्जित है।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होकर आप सब इस ऋतु का आनंद ले सकते हैं।

कहां ढूंढिएगा वसंत का आगमन?

- विनीता चतुर्वेदी, नीरजा (दिल्ली)

ऊंचे–ऊंचे सीमेंट के दरख़्त सी खड़ी
बिल्डिंग के जंगल से महा नगरों में,
कहां ढूंढिएगा वसंत का आगमन?
आकर गुज़र जाती है यहां से तोअनछुई वासंती पवन मन भावन।
बालकनी में सजे गमलों में से झांकते कुछेक फूल,
अथवा ऊंची अट्टालिकाओं के नीचे बगीचे में करीने से सजी क्यारियों में पंक्ति बद्ध लगाए गए कुछ मौसमी फूल ।
वसंत के आगमन का अहसास भर कराते हैं।
वसंत के मस्त मौसम का आनन्द कहां दे पाते हैं ?
कहां पायेंगे आप महानगरों में लहराते पीले सरसों के खेत ?
कहां बौराई अमराइयों में कूकती कोयल की टेर ?
वसंत आता और चला जाता है,
महानगरों में उसका कोई असर नहीं दिख पाता है।
निर्लिप्त भाव से खड़े सीमेंट के ऊंचे दरख़्तों पर,
वसंत का आना न आना कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाता है।
वसंत आता है और आकर गुज़र जाता है।।

भोजशाला

श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल

भोजशाला सरस्वती और बसन्त में, परस्पर ऐसा समन्वय भाव है, की बसंत लगते ही भोजशाला में परमार कालीन प्रकंपन जाग उठते हैं। हजारों पग भोजशाला की ओर दौड़ पड़ते हैं। जब जब भी भोजशाला का जिक्र होता है माँ सरस्वती और बसंत पंचमी आमने सामने आ जाते हैं। लाखों लोगों की श्रद्धा की केंद्र अद्भुत एवं चमत्कारिक माँ वीणा वादिनी की प्रतिमा जो लंदन के संग्रहालय में है उनको भोजशाला कि उनकी प्रतिष्ठा भोजशाला उनके प्रतिष्ठित स्थान पर प्रस्थापित करने का संकल्प जाग उठता है। भोजशाला किसने बनाई? कैसे बनी इसका जानना भी आवश्यक है तथा इसका विवाद से चोली दामन का साथ क्यों है?

निर्माण का इतिहास

भोजशाला धार में परमार वंश के राजा राजा भोज ने 10 35 में स्थापित की थी। राजा ने भोज पाल नाम से संपूर्ण विश्वविद्यालय की स्थापना की थी विश्वविद्यालय संस्थापक कुलपति थे राजा भोज। नालंदा विश्वविद्यालय तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय था। पहले 1034 में धार नगर में सरस्वती सदन की स्थापना की यह एक महाविद्यालय था जो बाद में , भोजशाला के नाम से विख्यात हुआ। राजा भोज ने वहाँ माँ वीणा वादिनी की प्रतिमा स्थापित की। मां सरस्वती की प्रतिमा के पास बैठकर राजा भोज ने अलंकार शास्त्र, योग शास्त्र, वैद्यशास्त्र,काव्य शास्त्र,ज्योतिष एवं धर्म सम्बन्धी,संगीत सम्बन्धी साहित्य का सृजन किया। राजा भोज ने 84 ग्रंथों की स्थापना की थी उनमें से केवल 21 ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। मां बागेश्वरी के साधक राजा भोज खगोलीरचना कोष रचना, भवन निर्माण ,काव्य और औषधी शास्त्र के विद्वान तथा ज्ञाता थे।

यह पूर्व में भी मैं उल्लेख कर चुकी हूँ।राजा भोज परमार वंश के राजा थे उनकी राजधानी का नाम धारावी था जो बाद में धार के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आठवीं शताब्दी से चौदहवी शताब्दी तक राजा भोज का शासनकाल रहा, अपने शासनकाल में राजा भोज ने बहुत से युद्ध किए युद्ध कला में पारंगत होने के बाद भी आपने अपने राज्य का व्यवस्थित विस्तार किया। बहुत सारे मंदिरों का निर्माण कराया लेकिन सभी मंदिर विलुप्त हैं कोई भी मंदिर के अवशेष भी प्राप्त नहीं होते। राजा कभी दार्शनिक तथा विद्या प्रेमी थे।

धार ऐतिहासिक सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर है, बैरल पहाड़ियों से घिरा धार जहां हिंदू-मुसलमान दोनों के स्मारकों के अवशेष हैं,। धार नगर के अंदर ही राजा भोज शोध संस्थान में राजा भोज के ग्रंथों का संकलन है धार का किला तथा भोजशाला दोनों ही प्रसिद्ध है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार धार की उत्पत्ति राजा मुंजवाकापति से जुड़ी है धार प्राचीन काल से ही अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। चौदहवी शताब्दी मैं धार मुसलमानों ने जीत लिया धार की लाट मस्जिद की मीनार जैन मंदिर पर बनी है, 14 और 15 वीं शताब्दी में निर्मित मस्जिद में कमाल मौलाना की समाधि है।

भोजशाला का विवाद

बसंत पंचमी के आते ही धार की भोजशाला का नाम सुर्खियों में आ जाता है प्रशासन के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आती है प्रशासन भोजशाला को एक अभेद किले की तरह चौकसी करता है। हिंदू समाज पूजा तथा मुस्लिम समाज संगठन नमाज अदा करने पर अड़े रहते हैं। आपसी सद्भाव बनाए रखना प्रशासन के लिए चुनौती बन जाता है। बसंत पंचमी के दिन राजनीति एवं धर्म नीति के कारण धार का वातावरण में भय व्याप्त व्याप्त हो जाता है।

गौशाला के मंडप के सामने मुस्लिम संप्रदाय शुक्रवार के दिन नवा ज्यादा करता है तथा मंगलवार हिंदू धर्मा लंबी पूजा करने

एकत्र होते हैं। तथा हिंदू समाज प्रांगण में यज्ञशाला मानकर वहॉ पर हवन आदि भी करते हैं

मॉ सरस्वती की प्रतिमा भोजशाला समीप खुदाई में मिली थी। इतिहासकारों के अनुसार ये प्रतिमा अट्ठारह सौ पचहत्तर की खुदाई में प्राप्त हुई 1880 में भोपावर पोलिटिकल एजेंट मेजर किनकेड इसे अपने साथ लंदन ले गया। सन 1305 से 1401 के बीच अलाउद्दीन खिलजी तथा दिलावर खान गोरी की सेनाओं ने महक देव और गोरा देव में युद्ध हुआ मालवा स्वतंत्र सल्तनत बन गया। 14 सो 56 में महमूद खिलजी ने दरगाह का निर्माण कराया।

दावे

हिंदू तथा मुस्लिम दोनों समूहों के दावे हैं हिंदू भोजशाला को सरस्वती का मंदिर मानते हैं हिंदुओं का तर्क है राजवंश काल में थोड़े समय के लिए नमाज की अनुमति थी मुस्लिम का कहना है बरसों से नमाज पढ़ते हैं वह इसे भोजशाला कमाल मौलाना मस्जिद कहते हैं। बसंत पंचमी को हिंदू गौशाला गर्भ गृह में मां सरस्वती का चित्र कर पूजा करते हैं 1909 में धार रियासत ने दरबार गजट में संरक्षित स्मारक घोषित किया तथा बाद में पुरातत्व विभाग में चला गया। आर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ इंडिया पर देखरेख की जिम्मेदारी है धार स्टेट ने 1935 में परिसर में नमाज जुमे की अदा करने की अनुमति दी तब भोजशाला शुक्रवार को खुलती थी। 2003 में व्यवस्था बदल दी गई मंगलवार को हिंदू सूर्योदय से सूर्यास्त तक चावल औरफूल से पूजा करते। शुक्रवार को 1:00 बजे से 3:00 बजे तक नमाज अदा कर सकते हैं यह आदेश 31 जुलाई 1997 का था।

18 फरवरी 2003 में परिसर में हिंसा फैली दंगा हुआ 2013 में बसंत पंचमी को शुक्रवार पर जाने के कारण भी विवाद हुआ हिंदू पूजा छोड़ने को तैयार नहीं थी हवाई फायर हुए लाठीचार्ज हुआ वर्तमान में मंगलवार को हिंदू पूजा करते हैं तथा शुक्रवार को नमाज अदा होती है। 18 फरवरी 2003 में परिसर में हिंसा फैली दंगा हुआ 2013 में बसंत पंचमी शुक्रवार को पड़ी तो विवाद हुआ हिंदू पूजा छोड़ने को तैयार नहीं थे हवाई फायर हुए लाठीचार्ज हुआ। वर्तमान में मंगलवार को हिंदू पूजा करते हैं तथा शुक्रवार को नमाज अदा होती। रोक लगाई तथा मंगलवार की पूजा रोक दी तथा नवाज शुक्रवार को होगी। पर्यटन के के लिए प्रवेश खोल दिया गया क्रिकेट लेकर पर्यटक अंदर प्रवेश कर सकते हैं।

आग्रह

मेरा समाज के सभी बंधुओं से निवेदन है कि आपके पूजा घर में स्थापित गुल्लक में एकत्र राशि को वर्ष में एक बार महासभा के खाते में हस्तांतरित करने का कष्ट करें। आप सभी से निवेदन है कि यदि संभव हो तो एकत्र राशि यथाशीघ्र महासभा के खाते में हस्तांतरित करने की कृपा करें।

खाते का विवरण निम्नानुसार है
Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha*
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
*Branch- Anand vihar delhi
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी
सचिव, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
मोब. 9871170559

संशोधनः- जनवरी 2022 अंक में पेज न.29 पर प्रकाशित लेख में र.क्र.827 भी पढ़ा जावे।

शांत रहें और तनावमुक्त रहें

- रचना पांडे, नोएडा, योगा थेरेपिस्ट

'कुछ भी स्थायी नहीं है, यह भी बीत जाएगा'। इस सकारात्मक पुष्टि की मदद से हर रोज नए सिरे से शुरुआत करें। यह आपको ऊर्जा के उच्च स्तर के साथ कार्य करने की अनुमति देगा, न केवल खुद को बल्कि आपके आस-पास के लोगों को भी प्रेरित करेगा। हम सभी मानव इतिहास के सबसे कठिन समय में से एक का सामना कर रहे हैं जो सभी को प्रभावित कर रहा है, लेकिन जीवन में ऐसी अभूतपूर्व परिस्थितियों से निपटने के लिए उपकरणों की कमी है। बच्चे अधिक तीव्रता से प्रभावित होते हैं। स्कूल भी केवल एक सुलभ इकाई बन गया है, जिससे युवा लोग महामारी के चंगुल में और भी अधिक फंसे हुए महसूस कर रहे हैं। बच्चे, युवा छात्र हमारे समाज की रीढ़ हैं, इसलिए माता-पिता के रूप में हम इन कठिन समय में उनका मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी लेंगे। तनाव दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है, पहले से भी ज्यादा। हालांकि, दो प्रकार के तनाव के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है, यह जानने के लिए कि कौन सा वास्तव में हानिकारक है, खासकर यदि इसे अधिक नियमित रूप से अनुभव किया जा रहा हैः

1. यूस्ट्रेस [Eustress]ः प्रेरक और सकारात्मक तनाव।
2. संकट [Distress]ः नकारात्मक और दबाव और संघर्ष के कारण।

जब भी हम किसी कठिन तनावपूर्ण स्थिति का सामना करते हैं तो उससे निपटने के लिए सहानुभूति तंत्रिका तंत्र [sympathetic nervous system] अपने आप सक्रिय हो जाता है। सहानुभूति तंत्रिका तंत्र के सक्रिय होने पर हमारी श्वास या तो बहुत भारी हो जाती है या उथली हो जाती है। जब हम अधिक मस्तिष्क कार्य करते हैं जैसे लंबे समय तक अध्ययन करना, प्रतिस्पर्धी दबाव में, मस्तिष्क की ओर अधिक रक्त पंप किया जाता है जिससे पोषण की उच्च आपूर्ति की मांग होती है। इस मांग को पूरा करने के लिए हृदय उच्च गति से पंप करना शुरू कर देता है। अनियंत्रित, पम्पिंग की लगातार उच्च दर के परिणामस्वरूप धड़कन हो सकती है।

यह तनाव की शारीरिक भावना है। एक संतुलित श्वास महत्वपूर्ण है, न तो बहुत भारी और न ही बहुत उथली क्योंकि यह हृदय की पंपिंग गतिविधि को नियंत्रित करके मन की कार्यप्रणाली को नियंत्रित करती है। यहीं पर योग का नियमित अभ्यास आता है। योग हमारे मन और विचारों को स्थिर करने में मदद करता है। यह हमारे शरीर के अंदर छिपी ऊर्जा को जगाकर संपूर्ण विकास को बढ़ाता है।

उच्च तनाव के स्तर को सरल योग प्रथाओं द्वारा प्रबंधित किया जा सकता है। योगाभ्यास के 3 बुनियादी वर्गीकरण निम्नलिखित हैं : **1. प्राणायाम** – एक सांस लेने का व्यायाम, यह तंत्रिका तंत्र को तनाव मुक्त करके और सिस्टम को डिटॉक्सीफाई करके आराम देता है। इस प्रकार पूरे शरीर का कायाकल्प हो जाता है जिससे व्यक्ति की क्षमता और उत्पादकता में वृद्धि होती है। यहां तक कि वैज्ञानिकों ने भी पाया है कि नाक चक्र मस्तिष्क के कामकाज से मेल खाता है जैसा कि बायोफिजिक्स 2019 के ओपन जर्नल में प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक सांस हमारे केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को पोषण प्रदान करती है जिससे यह सुचारू रूप से कार्य कर सके, जो बदले में हमारे अन्य प्रणालियों के कामकाज को अनुकूलित करता है तन।

2. आसन – विभिन्न आसनों के अभ्यास से शक्ति, सहनशक्ति और लचीलेपन में वृद्धि होती है। योग अभ्यास स्मृति शक्ति को बढ़ाता है, आत्म सम्मान का निर्माण करता है, विचारों की स्पष्टता लाता है और रचनात्मक सोच में सुधार करता है।

3. ध्यान– मन को किसी निश्चित वस्तु पर या किसी निश्चित बिंदु पर केंद्रित करना या केवल अपनी सांसों के प्रति जागरूक होना, अंदर आना और बाहर जाना विचारों पर नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम हो सकता है। बाहरी गड़बड़ी से परेशान हुए बिना अपने अंदर जागरूकता लाकर व्यक्ति एक शांतिपूर्ण मन की स्थिति तक पहुंच सकता है, यह ध्यान है। एक शांत मन जबरदस्त स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है। जबकि उपरोक्त अभ्यास सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं, बच्चों के लिए विशेष रूप से वे और भी अधिक आवश्यक हैं, क्योंकि ऑनलाइन सीखने, असाइनमेंट जमा करने के साथ-साथ अन्य गतिविधियों को एक साथ बिना किसी ब्रेक टाइम के दोस्तों के साथ प्रबंधित करना और ताजा हवा जो स्कूल की सेटिंग प्रदान करने में सक्षम थी महामारी के दौरान बच्चे तनाव के उच्च स्तर का अनुभव कर रहे हैं। न केवल बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बल्कि समग्र स्वास्थ्य लाभ के लिए योग को अपनाया जाना चाहिए। शारीर को स्थिर करने के साथ-साथ इसके मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को बनाए रखने में सहायता करता है योग।

ध्यान– मन को किसी निश्चित वस्तु पर या किसी निश्चित बिंदु पर केंद्रित करना या केवल अपनी सांसों के प्रति जागरूक होना, अंदर आना और बाहर जाना विचारों पर नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम हो सकता है। बाहरी गड़बड़ी से परेशान हुए बिना अपने अंदर जागरूकता लाकर व्यक्ति एक शांतिपूर्ण मन की स्थिति तक पहुंच सकता है, यह ध्यान है। एक शांत मन जबरदस्त स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है।

परीक्षाएं इतनी मुश्किल भी नहीं

- डॉ.अलका चौबे, मुंबई, मनोवैज्ञानिक सलाहकार

मुंबई मेरे घर के आस-पास कई स्कूल व कॉलेज है लॉकडाउन खुलने के उपरांत भी जब मैं उनके आसपास से गुजरती हूँ, तो मुझे हमेशा वह विश्व प्रसिद्ध कहानी की याद आती है। जिसमें एक राक्षस ने अपने बगीचे में बच्चों का प्रवेश वर्जित कर दिया था। उस बगीचे में न कभी फूल मुस्कुरा कर खेलते थे। ना चिड़िया चह चहाती थी और ना ही भूमर और तितलियां फूलों पर मंडराती थी। एक दिन राक्षस को अपनी भूल का अहसास हुआ। उसने अपने बगीचे के दरवाजे बच्चों के लिए खोल दिए और बगीचा मुस्कुराने लगा। ऐसे ही बच्चों विद्यार्थियों का शोर, शैतानी और खिलखिलाहट के बिना स्कूल कॉलेज दिखाई देते हैं, उदास शांत जीवन सुरभि विहीन।अब फिर से स्कूल कॉलेज में आनंद की खुशबू आने लगी है। कम ही सही। सावधान ही सही पर बच्चे तो आए हैं। मास्क के पीछे छिपी मुस्कुराहट,आँखों में ज्यादा झिलमिला रही है। सच पूछिए तो माता-पिता ने भी थोड़ी सी चैन की सांस ली है। ऑनलाइन क्लास जहाँ बच्चों के लिए समस्या रही है। वहाँ अध्यापक और माता-पिता भी कम परेशान नहीं थे। अनिश्चय और असमंजस की स्थितियों में फिर से परीक्षा का मौसम आ गया है। सिलेबस पूरा होने के साथ-साथ कुछ नई समस्याएं जिन पर किसी का ध्यान थोड़ा कम ही गया है, वह है इंटरनेट की अवाध गति, लैपटॉप मोबाइल की निरंतर चार्जिंग, सबसे बड़ी बात लिखने की अभ्यास का अभाव तथा 3 घंटे बैठकर लिखने की आदत। ना तो ऑनलाइन क्लास में बच्चों ने ज्यादा लिखा, ना ठीक से बैठे और ना स्कूल जैसे अनुशासन का पालन किया। अलग तरह की शैतानियां भी बड़ी है। परीक्षाएं तो हर वर्ष की तरह फिर से बहुत नजदीक है। हर अभिभावक को यह सच स्वीकार करना ही पड़ेगा की अधिकांश बच्चों में चिड़चिड़ाहट, घबराहट,निराशा है। याद करने की क्षमता प्रभावित हुई है। बच्चे मेरे अनुभव से शारीरिक रूप से आलसी हुए हैं। उनका वजन भी अधिकांशतः बढ़ गया है। पर मानसिक कुशाग्रता (शार्पनेस) में निश्चित रूप से थोड़ी कमी आई है। आज आपको मेरे यह निम्न विनम्र सुझाव हैं -

1. अपने बच्चे को समझने का प्रयास करिए। उसके आलोचक ही मत बने रहिए। उसको आपके सहयोग की इस समय बहुत आवश्यकता है।
2. स्थितियां अभी सामान्य नहीं हुई है। आशंका तो बनी हुई है, इसलिए बच्चों से अत्यधिक अपेक्षाएं रखना उन्हें तनावग्रस्त बना सकता है।
3. माता-पिता को भी यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी भी अनुशासन की डोर ढीली हुई है। अतः अब समय है कि स्वयं का भी संयम और अनुशासन से आकलन करें। बच्चों को भी परीक्षा के लिए समय नियोजन टाइम मैनेजमेंट करना अवश्य सिखाएं।
4. योग और एक्सरसाइज हल्का किंतु आवश्यक रूप से करें साथ ही पौष्टिक भोजन परीक्षा की तैयारी में बहुत मदद करता है।
5. बच्चों को अब स्वयं अनुशासित होना सीखना चाहिए। आत्मनिर्भरता इन दिनों चर्चित शब्द रहा है। जीवन में, पढ़ाई में बच्चे स्वयं पर जितना विश्वास करेंगे, उतने ही सफल होंगे। इसलिए मेरा यह विश्वास है कि बच्चों को कभी भी जबरदस्ती पढ़ाई नहीं करवाई जा सकती। उनमें स्वयं ही पढ़ने की इच्छा होना आवश्यक है और इसके लिए आत्म आकलन, आत्म अनुशासन बहुत जरूरी है। इसका सरल स तरीका है अपना टाइम टेबल स्वयं बनाएं (चाहे तो अपने बड़ों से सहायता ले लें) उसका सख्ती से पालन करना चाहिए और अगर लापरवाही हो तो अपनी सजा का खुद ही निर्धारण करें। सबसे जरूरी बात, इन दिनों कोरोना से भी बड़ी व्याधि रही है सोशल मीडिया, व्हाट्सएप, फेसबुक आदि आदि। एक सीमा तक यह आवश्यक और उपयोगी होता है। पर इसका अति का प्रयोग मानसिक विकास को अवरुद्ध ही करता है। आजकल माता-पिता की एक समस्या बच्चों का इसमें अति का व्यस्त रहना है। डाँटना या चिड़चिड़ाना समाधान है ही नहीं। समाधान है इसके बराबर का कोई रुचिकर कार्य में व्यस्त करना। परीक्षा को कोई खतरनाक दानव का रूप मत दीजिए। यह ना कोई युद्ध है, ना शत्रु और ना ही बच्चे के जीवन का अंतिम पड़ाव। हर साल परीक्षाएं आती हैं। लाखों बच्चे परीक्षा देते हैं, और सफल भी होते हैं। इसीलिए परीक्षा को हौव्वा मत बनाइए। सफल होने का बस एक ही सूत्र है। 3D फार्मूला - डिसिप्लिन, डेडीकेशन, डिजायर यानी अनुशासन, लक्ष्य के लिए समर्पण और अपना सर्वोत्तम देने की इच्छा। इसलिए अपनी ओर से कोई कसर मत छोड़िए। ठीक से तैयारी कीजिए, अपनी स्वयं एनालिसिस कीजिए, यानी अपने मजबूत पक्षों की ओर ध्यान दें। अपनी कमियों को ईमानदारी से स्वीकार करके दूर करने का प्रयास करें। सफलता आपके कदम चूमेगी। आने वाली प्रत्येक परीक्षा के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

ईनाम

- **श्रीमती उषा चतुर्वेदी**, भोपाल

सेन्टल जेल के महिला वार्ड में आज कुछ खास चहल-पहल दिख रही थी। कैदी महिलाएं अपने स्थान पर पंक्तिबद्ध बैठी थी। उनके बच्चे साफ-सुथरे होकर अपनी माताओं के साथ बैठे थे।

उद्घाटन की पूरी तैयारी है जेलर ने पूछा

हाँ साहब पूरी तैयारी है

महिला पुलिस कांस्टेबल ने कहा

“जय हिंद सर जेल सुपरिटेंडेंट के आते ही जेल ने सलाम किया ,चोरे सब कुछ अच्छी तरह से देख लिया”

हाँ सर पूरी तैयारी है

जेलर ने उत्तर दिया

आज सेंट्रल जेल की महिला वार्ड में कैदी महिलाओं के साथ रहने वाली छोटे–छोटे बच्चों के लिए स्कूल खुल रहा था।

सर मंत्री जी आ गए

जेलर ने जेल सुपरीटेंडेंट को सूचना दी। जेल का का बड़ा फाटक खोल दो।

मंत्री जी का प्रवेश हो गया और वह उदघाटन स्थल पर पहुँच गई। कार्यक्रम सम्पन्न हो गया और छोटे–छोटे बच्चों को मंत्री जी टापियाॅ बाँटनने लगी मेडम नमस्ते मेरा नाम सलोनी है, एकसुन्दर सी चंचल लड़की ने अपने आप ही अपना परिचय दे दिया।

मेंडम ने एक टाॅफी देदी

मैडम आपको डाँस दिखाऊँ

यहाँ कोई देखता ही नहीं'

और वह छोटी बच्ची डाँस करने लगी।

डाँस बहुत सुन्दर था।

मैडम भी प्रसन्न हो गई

''किसने सिखाया यह डाँस'

मेरी मम्मी ने

उसकी तोतली भाषा और निर्भीकता देखकर मैडम प्रभावित हो गई।

शैष बची हुई टाॅफी अभी बच्चों में बाँट दी गई

सलोनी टाॅफी लो लो

मैडम मुझे पहले मिल गई'

मैं झूठ नहीं बोलती

अच्छा झूठ बोलने से क्या होता है

मम्मी कह रही थी मैंने झूठ बोला तो मुझे सजा मिली तो तुम कभी झूठ नहीं बोलना'

मम्मी के झूठ बोलने से पापा नाराज है इसलिए हम से मिलने नहीं आते।''

मंत्री जी ने जेलर की तरफ देखा इशारे से कहा बतऊँगा।

मंत्री जी ने उसे टाॅफी देते हुए

कहा यह तुम्हारा सच बोलने का इनाम है'

बच्ची खुश हो गई उसने कहा मैं पापा को दिखाऊँगी'

मंत्री जी जाने के लिए पलट गई।

उसी समय जेलर ने उन्हें रास्ते में बताया इस बच्ची का जन्म जेल में ही हुआ है माँ हत्या के केस में बन्द है। उस महिला ने अपने पति का अपराध अपने सिर पर ले लिया था। उस समय तो घर वालों ने गवाही दिलवा दी उसके बाद आज तक कोई मिलने नहीं आया सुना है पति ने दूसरी शादी कर ली और मंत्री जी उस छली गई महिला कैदी के बारे में सोचने लगी।

भाषाओं का विलोपन

- इंजी0 शिखर चतुर्वेदी इटावा

मनुष्य के जीवन में भाषा के संस्कार में की थपकी और उसकी लोरी के साथ शुरू हो जाते है। भाषा हमे आत्मीयता संवेदना के संस्कार देती है, उस मिठास का भी अनुभव कराती है जिसकी सौंधी महक माँ की लोरी में निहित रहती है। भाषा पूज्य और सम्मानित माना जाता है, फिर चाहे वह क्षेत्रीय भाषा हो या राज्य स्तरीय हो या मानक की श्रेणी में आने वाली विश्व की कोई स्तरीय भाषा क्योंकि भाषा भावना संप्रेषण का कार्य करती है जिससे व्यक्तियों में लगाव होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कहते है कि भाषा प्रयुक्त एक एक शब्द एक एक स्वराघात कुछ सूचना देते हैं। व्यक्तियों के नाम कुलों या खानदानों के नाम पुराने गाँव के नाम जीवंत इतिहास के साक्षी है हमारे रीति–रस्म पहनावे पर्य, उत्सव और हमारे पुराने इतिहास की कथा सुनाते हैं। वर्तमान में भाषाओं की स्थिति अति संवेदनशील है। यही कारण है कि दुनियाँ के पटल से भाषाओं का क्रमशः मिटना शुरु हो गया है। विश्व के जिन देशों में भाषाओं के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है, उनमें भारत भी शामिल है। वर्ष 2010ई0 में जब अण्डमान की दस बोलियों में से 'बी' भाषा की अन्तिम जानकार बोआ नाम की बुजुर्ग महिला का निधन हुआ था उस वक्त कविवर नागा अर्जुन ने अपनी भावाभिव्यक्ति को इन मर्मस्पर्शी पंक्तियों के साथ प्रस्तुत किया था

क्या हुआ अगर एक भाषा खत्म हो गई वह अपने झूठ और सच के साथ दफन हो गई शब्द नहीं रहे / दुनियों बढ़ती रही / बोओं की दुनियों की खातिर / कही कोई नहीं रोया। किसी भाषा का इस तरह खत्म होना यकीनन दुखद है, क्यूँकि भाषा का सम्बना हमारी संस्कृति से है, हमारे अस्मिता से है, हमारे संस्कारों से है। यही वजह है कि अब यह नितात आवश्यक हो गया है कि हम भाषाओं के संरक्षण की तरफ गम्भीरता से ध्यान दे और इन्हें विलोपित होने से बचायें भाषाओं के विलोपन तथा इनके मिटने के कही कारण है, जिनमें पहला और सम्भवता सबसे खतरनाक कारण है वैश्वीकरण और भूमण्डली करण वैश्वीकरण ने भाषा के प्रति हमारा दृष्टिकोण ही बदल दिया है। अब हम उसे ही भाषा मान रहे हैं, जो रोजगार परख है जो विश्वमंच पर स्थापित हैं या हो रही हैं तथा जिसका फलक विस्तृत है। रोजगार से जुड़ी भाषाओं ने स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं को पीछे धकेल दिया है, फिर चाहे वह भारत के किसी आदिवासी क्षेत्र मे बोली जाने वाली भाषा हो अथवा इण्डोनेशिया जैसे देश की स्थानीय भाषा मलय इण्डोनेशिया में वहा की स्थानीय भाषा मलय को लेकर स्थिति भयावह वह जटिल है, क्यूँकि रोजगार से इस भाषा का कोई रिश्तानाता नहीं है।

स्थिति यह निर्मित हो चुकी है कि इण्डोनेशिया में मलय भाषा को यहा वरिष्ट नागरिक ही बोलते हैं। भाषा के प्रति इस प्रकार से नजरिये का बदलाव घातक साबित हो रहा है।

भाषाओं के विलोपन का एक बड़ा कारण यह भी है कि भाषायें ही भाषाओं की दुश्मन बन बैठी है। कुछ कुछ स्थिति वैसी ही जैसी तालाब की मछलियों की होती है। जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, लगभग उसी प्रकार ज्यादा प्रचार–प्रसार वाली बड़ी भाषाये छोटी स्थानिय भाषाओं को निगल लेती हैं। इससे भाषाई असंतुलन भी बढ़ता है जहा कुछ भाषाओं का वर्चस्व बढ़ता जाता है वही अनेक भाषायें सिमटने–सुकड़ने लगती हैं। हिन्दी, अंग्रेजी, चीनी, स्पेनिश आदि भाषायें तालाब की वह बड़ी मछलिया है, जिन्होंने उन भाषाओं को निगलने का काम किया है, जो सशक्त होकर उभर नहीं पाई। भाषाओं को बचाने के लिये यह भी आवश्यक है कि इनका समन्वय किया जाये।

कालिराज ने कहा था

भाषा मानव मस्तिष्क की वह प्रयोगशाला है जिसमे अतीत की सफलताओं के जय स्मारक और भावी सफलताओं के लिये अस्त्र शस्त्र एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह साथ रहते हैं। भाषाओं को बचाने की इस कवायद में जन सहयोग भी आवश्यक है। भाषा विदों के अलावा हर उस व्यक्ति को आगे आना होगा जो भाषाई वैविध्य का पक्षधर है। यह पहले सिर्फ भारत में ही नहीं, विश्व स्तर पर भाषा वसुधा की परिकल्पना के साथ होनी चाहिये। एमर्सन के शब्दों में भाषा वह नगर है जिसके निर्माण में प्रत्येक मनुष्य एक एक पत्थर लाया है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र की मान्यता है कि निज भाषा सुन्दर अझै निज उन्नति को मूल दिन निज भाषा ज्ञानके मिट न हिय कौशल। हो और यदि सभी लोग अपनी अपनी भाषा से प्यार करने लग जाये तो समस्या का अन्त जाये।

टी.एन. चतुर्वेदी एडवोकेट
व्यक्तित्व और कृतित्व

27 दिसम्बर 2021 की रात —अचानक फ़ोन की घंटी बजती है, और वह कटु सत्य सुनने को मिलता है,जिसकी कल्पना मात्र से हृदय सिहर उठता है — पापा सदा के लिए चिर निद्रा में सो गए । प्रकृति भी क्या खेल दिखाती है एक दिन पूर्व तक पत्रकारों को अच्छे से इंटरव्यू देने वाला व्यक्ति ..... अकल्पनीय है।

गरीबो के मसीहा थे पापा, भले ही पेशा वकालत का हो लेकिन दिल इंसानियत का था । केवल सुनती थी कि पापा गरीबो का भला करते हैं, लेकिन उस दिन मेरी आंखे भी नम हो गई जब एक छोटी बच्ची का केस जीतने के बाद उसके पिता के द्वारा काफी बड़ी राशि पापा को दिए जाने पर,पापा ने मना करते हुए कहा नहीं लूँगा,केस जीतना तो केवल दिलासा मात्र हे, भगवान भी न्याय नहीं दिला सकेंगे इसे तो। एक मर्डर केस आया तो पापा ने बोला जिंदगी भर जिसने चाचा बोला उसके लिए अभी भी मैं बच्चे का भाव ही मन में रखता हूँ। मैं उसके घर वालों के साथ हूँ , उनके विरोध में नहीं जाऊंगा। सिद्धान्तवादिता की प्रतिमूर्ति पापा दृढ व्यक्तित्व के धनी थे,भले ही किसी भी प्रकार की कितनी ही मुश्किलों का सामना उन्हें क्यों ही न करना पड़ा हो, लेकिन घर वालो को फायदा दिलाना,दूसरो के सामने झुकना उन्हें पसंद नहीं था । आठ नौकरियाँ छोड़ी, जिंदगी भर इस सम्बन्धी गलत नीतियों के खिलाफ मंत्रियों से भी क़ानूनी लड़ाई की लेकिन गलत को स्वीकार्य उनके स्वभाव में न था । गर्ल्स कॉलेज खुलवाना,महाविद्यालय में एम.ए,एम कॉम लाना, लॉ की मान्यता बचाना ट्रेनों को रुकवाना ,आवश्यकतानुसार कभी कॉलेज तो कभी निजी संस्थाओ को जमीने मुहैया कराने में उन्हें अच्छा लगता था,इस सम्बन्ध में वह हर किसी के लाभ हानि की समीक्षा मन ही मन जरुर करते थे,कि किसी भी कृत्य से किसी का बुरा तो नहीं हो रहा?मुझे याद आ रहा है कि जैसे ही किसी का देहावसान होता था,पापा कलम और कागज लेकर बैठ जाते थे उसकी महानता लिखने में।मैं कहती थी कि पापा जाने वाला गया अब क्या सम्बन्ध किसी से तो वे कहते थे ये मेरी श्रद्धांजलि है उनके प्रति ।मै घर वालो को इतना नहीं बोल पाऊंगा, जितना इस लेख को समाचार पत्रों में प्रकाशित कराकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कर पाउँगा।

हर होली पर कितनी ही टोली घर पर आतीं,बड़ी राशियाँ और मिठाइयाँ लेकर ख़ुशी से चतुर्वेदी सरकार/दादा/वकील साहेब की जय से पूरा मोहल्ला गुंजायमान हो जाता । घर पर,कोर्ट में,रास्ते में दूसरों को खिलाते रहने का बड़ा शौक था पापा को।'बी जस्ट लाइक एन आर्मीमैंन बहनियां'-बचपन में हर सुबह की शुरुआत उनके इन्ही शब्दों से हुई है, जिसने जिंदगी भर के लिए मुझे एक्टिव बना दिया । सही कहू तो मेरे पापा हीरो थे,जिन्होंने कभी भरी सर्दी में देर रात कुए में से स्त्री को निकाला, तो कभी मात्र एक लाठी की दम पर चोरी का माल वापस दिलाया तो कभी दिग्गज नेताओं के आव्हान पर भी बड़े पदों और पार्टी बदलने जैसे अवसरों को ठुकरा दिया। अफ़सोस यह कि हम व्यक्ति के सद्कर्मो का बखान उसके जाने के बाद ही करते हैं। वरिष्ठ अभिभावक,पत्रकार,लोकतंत्र सेनानी,समाजसेवी,अनेको समितियों और संघों में अलग अलग पदों पर आसीन व्यक्ति ने किस प्रकार अपने भरे पूरे परिवार की हर आवश्यकता को परिपूर्ण करके दुनिया से विदाई ली है,यह तारिफेकाबिल है। यहाँ एक वास्तविकता का खुलासा और करना चाहूंगी कि पापा की मौत नहीं आई थी,वे तांत्रिक गतिविधियो का शिकार बन गए,फिर भी उन्होंने गलत कृत्य करने वालों का बुरा नहीं चाहा,केवल ईश्वर के ध्यान में विश्वास किया,पर शायद ईश्वरीय सत्ता, आसुरी शक्ति के आगे हार गई। श्री पीताम्बरा पीठ दतिया और कुलदेवी महाविद्या देवी में उनके सारे ज्योतिर्लिंग विराजमान थे।समाज सेवा उनके सहज स्वभाव में था।ओजस्वी वक्ता,योग्य वकील,और कुशल नेता होने के साथ साथ वे एक बहुत अच्छे व्यक्ति और अच्छे पिता थे । एक अच्छे पति और पिता के सभी कर्तव्यों का निर्वहन उन्होंने जाने के एक सप्ताह पूर्व तक किया,निःसंदेह आगे भी करते,यदि ईश्वर के यहाँ उनके सत्कर्मो की जरुरत न पड़ती । कोर्ट में,स्टेशन पर,कॉलेज की कई कक्षाओ में और शहर के हर क्षेत्र में स्थान स्थान पर उनके काम बयां करते रहेंगे उनके सत्कर्मो की कहानी,जिसमे अपने नाम को पीछे रखकर,व्यक्ति हर कृत्य को अपना दायित्व समझ कर सद्भावना से परिपूर्ण करता रहा,शायद सच्ची समाज सेवा ही यही है।

उस दिन सारा आसमान रोया,तेज सर्दी और बारिश से सड़के सराबोर थीं,विचार किया जा रहा था,गाड़ी से उनकी रवानगी का,पर जनता के जज्बे और जज्बातों को यह स्वीकार नहीं था,वे तो अपने नेता को विमान पर विराजकर, अपने कन्धों पर आसीन करना चाहते थे,अचानक मध्यप्रदेश के गृहमंत्री जी की आवाज़ आई-जब कोई दिव्यात्मा पृथ्वी से जाती है तो प्रकृति भी रोती है। आश्चर्य-मौसम अचानक ठीक होता है,समाज के हर वर्ग के प्रिय दादा अपने अनेक पुत्रो के कन्धों को बारी-बारी से अलविदा कहते हुए मात्र चन्द लम्हों में सबको बिलखता छोड़ जाते हैं... ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे, जग रोए।

कहते हैं माँ बाप के सद्कर्मो का पुण्य उनकी संतानों को मिलता है, और इस बात को हम सब महसूस करते है। मुझे गर्व है ऐसे पिता की संतान होने पर जिन्होंने स्व से ऊपर उठकर ही जीवन जिया, परहित में जिनकी ख़ुशी थी,अभिमान की जिनमे बू भी न थी,पर स्वाभिमान ने जिन्हें कभी किसी गलत कृत्य के आगे नहीं झुकाया। साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के विशेषज्ञ पापा हर फील्ड के मास्टर थे। आज मेरी हर उपलब्धि मेरे पापा की ऋणी है, प्यारे पापा के साथ मेरे अच्छे शिक्षक और पी.एच.डी.के अप्रत्यक्ष गाइड भी थे पापा। शारीरिक रूप से न सही,लेकिन आत्मिक और मानसिक रूप से पापा सदा हमारे दिलो में रहेंगे, कभी आदर्श और संस्कार के रूप में, तो कभी शिक्षा के रूप में,और कभी इन दोनों के कारणही मिली नौकरियो के रूप में... करोगे याद तो हर बात याद आयेगी। सादर श्रद्धांजलि। (र.क्र. -873)

डॉ.अणिमा चतुर्वेदी, जयपुर
Mob. 7737864506, 8058508059

स्मृति शेषः- स्वर्गीय रामदास चतुर्वेदी

कोई बाप अपने बच्चों से कहीं दूर जाता है भला..! मैं हूं ना..

- पीयूष चतुर्वेदी, आगरा

उम्र मेरी भी 3 कम 75 की हो चली है और उम्र के इस पड़ाव पर जब कभी भी मैंने पिताजी स्वर्गीय श्री रामदास चतुर्वेदी के व्यक्तित्व को लेकर कुछ लिखने के लिए सोचना शुरू किया तो लगा कि मेरे पिताजी के बारे में यदि मैं भी लिखूंगा तो सब कुछ सकारात्मक ही होगा, नकारात्मक तो बिल्कुल ही नहीं। ऐसे में बहुत संभव है कि पिताजी (हम उन्हें पिताजी कहकर ही संबोधित करते रहे हैं) को लेकर मेरे लेखन पर कोई यह व्यंग्यात्मक टिप्पणी कर दे, मरे बबा की बड़ी-बड़ी अंखियां..। लेकिन..हकीकत यह है कि अब भी कुछ लोग मिल जाते हैं जो पिताजी के बारे में कुछ ऐसे-ऐसे किस्से बता देते हैं जो मुझे यह अहसास कराते हैं कि संभवतः लोग उनके संदर्भ इस कहावत का उपयोग नहीं करेंगे।

पिताजी ने 1964 तक संसार में मात्र 46 बरस का जीवन जिया। तब मैं साढ़े 13 बरस का किशोर था। बहुत ही अल्प समय उनके साथ बीता। लेकिन, आज भी कोई जब यह पूछ लेता है, तुम मैनपुरी से हो..मास्साब के बेटे..रामदास चतुर्वेदी जी के..? और, उसका इतना कहना, 'मैंने उन्हें देखा नहीं पर अपने पिताजी और पिताजी के कुछ मित्रों से उनकी विभिन्न विषयों पर अच्छी पकड़, विद्वता और हैडसम पर्सनेलिटी के बारे में बहुत सुना है..स्कूली पढ़ाई के अलावा उन्होंने सामाजिक जीवन व्यवहार के बारे में भी खूब पढ़ाया लोगों को.. ' मुझे एक अलौकिक आनंद और गौरव की अनुभूति से भर देता है और उनके विराट व्यक्तित्व के साये का अनुभव कराता है। लगता है कि जैसे वे अब भी साथ खड़े हैं और कह रहे हों, 'कोई बाप अपने बच्चों से कहीं दूर जाता है भला..! मैं हूं ना..'

हिंदी के नामचीन संपादक, कवि और साहित्यकार कमलेश्वर उनके शिष्य रहे। एक बार वे किसी सम्मेलन में मैनपुरी आये तो किसी मित्र ने यह बतला दिया कि मैं स्व.श्री रामदास चतुर्वेदी जी पुत्र हूं तो उन्होंने भीड़ में से ही इशारे से मुझे बुलाया और कमरे में उपस्थित लोगों के जाने के बाद पूछा, तुम भैया के बेटे हो..? (वे मेरे चाचा स्व.शरतचंद्र चतुर्वेदी के मित्र भी थे और इसीलिए पिताजी को 'भैया' कहा करते थे) मेरे हां में सिर हिलाने पर उन्होंने अपने पास बिठाकर ढेर सारी बातें कीं और फिर खोल दिया पिताजी के साथ उनके बिताये हुए अनगिनत किस्सों का पिटारा। चतुर्वेदी समाज से अलग किसी अन्य समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व यानी कमलेश्वर जी से मिलकर और पिताजी के किस्सों को सुनकर एक तरफ मन आनंद से सराबोर था और घर लौटकर अपनी मां से इस आनंद को मैं जल्द से जल्द बांटना चाहता था। तो दूसरी ओर.., मन में एक टीस भी रही कि हमें ईश्वर ने उनके साथ जीने का आखिर इतना कम समय क्यों दिया..?

मैनपुरी के चतुर्वेदी समाज को एक से बढ़कर एक मूर्धन्य शिक्षाविद् पैदा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चतुर्वेदी समाज के अतिरिक्त अन्य समाजों के दूर-दूर जा बसे लोगों से सुनकर लगता है कि जिन महान् शिक्षकों ने अपनी विद्वता, अनुशासन, सामाजिक कार्य और कार्यशैली से अलग छाप छोड़ी, उनमें पिताजी की गिनती जरूर होती रही है। उनके सौम्य स्वभाव के साथ शारीरिक सौंदर्य को भी लेकर समाज के ही कई लोग किस्से सुनाते हैं कि जब वे किसी विवाह समारोह में जाया करते थे तो न केवल पुरुष बल्कि बहुत सी महिलाएं भी उन्हें देखने लिए खिड़कियों से झांका करती थीं। हो सकता है कि यह सब अतिरंजना लगे। लेकिन, एक किस्सा हमारी दूर की मौसी ने एक

बार मेरे भानजे को सुनाया। उन्होंने अपने पैर के अंगूठे के टूटे हुए नाखून को दिखाकर उससे पूछा, जानते हो यह नाखून कैसे टूटा..? उसके नहीं बोलने पर उन्होंने कहा, तुम्हारे नानाजी जब इटावा आये थे तो हम तीन सहेलियां पानी पिलाने के बहाने उन्हें देखने के लिए उनके उस कमरे तक गये, जहां वो ठहरे हुए थे। पानी पिलाने की बजाय हम लोग पर्दे के पीछे छुपकर उन्हें बहुत देर कर देखते रहे कि अचानक रामदास जीजाजी (पिताजी) की निगाह हम लोगों पर पड़ी और उन्होंने हम लोगों से स्नेह से कहा, बाहर क्यों खड़ी हो..पानी टेबल पर रख दो। हमें लगा कि छुपकर चोरी-चोरी उन्हें देखते हुए उन्होंने हम लोगों को देख लिया है। इससे हम इतने घबराये कि पानी से भरा पीतल का गिलास छूटकर सीधा पैर के अंगूठे पर गिरा और अंगूठे का नाखून ऐसा टूटा कि वो कभी पूरा उगा ही नहीं।

छह फीट दो इंच लंबी मजबूत कद-काठी वाली वो काया हमने देखी थी। उनके भव्य व्यक्तित्व और शारीरिक सौंदर्य को लेकर आदरणीय रमेश चन्द्र चतुर्वेदी (मुम्बई) कहा करते हैं, 'I am still to see such a beautiful personality in my life." वे गवर्मेंट कॉलेज मैनपुरी में अंग्रेजी के अध्यापक थे लेकिन अपने सख्त अनुशासन के कारण भी विख्यात थे। शिक्षा जगत में पदार्पण से पहले उन्होंने सेना (रॉयल ब्रिटिश आर्मी) ज्वाइन की थी तथा 1939 में उन्हें कमीशंड रैंक हासिल हुई परन्तु कुछ पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्हें सेना छोड़नी पड़ी। सर लक्ष्मीपति मिश्र जी के कृपापात्र होने के कारण कलकत्ते (वर्तमान में कोलकाता) में उन्होंने नौकरी की जहां मन न लगने के कारण वे वापस मैनपुरी आ गए। एक बार पिताजी को हृदयाघात हुआ। उसके बाद सर साहब उन्हें देखने विशेषरूप से कलकत्ते से मैनपुरी आए। मुझे अच्छी तरह याद है कि उन्होंने पिताजी से कहा था, " रामदास हमने तुमसे कही कि जे मैनपुरी सांप की कुंडली है, जो जामे रह गओ ताय खाय गई और जो निकर गाओ सो बन गओ।"

पिताजी पर आदरणीय भैयासाहब यानी श्री श्रीनारायण जी की भी बड़ी कृपा थी। वे जब भी मैनपुरी आते तो एक समय का भोजन हमारे जरूर किया करते थे। पिताजी अंग्रेजी और हिंदी के अच्छे जानकार होने के साथ साहित्यिक अभिरुचि के भी थे इसीलिए कई बार आदरणीय भैयासाहब के सानिध्य में घर के आंगन में ही काव्य गोष्ठियां भी हुआ करती थीं। तब ही महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी सहित कई मूर्धवन्य कवियों को अपने ही घर में बैठकर सुनने का सौभाग्य हम सभी परिवारजन को भी मिला था। मां स्वर्गीय माधुरीदेवी के शब्दों में, 'भैयासाहब का कहा पिताजी के लिए पत्थर की लकीर था।' उनके ही कहने पर पिताजी ने प्रयागराज से टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज से ट्रेनिंग ली। यहीं पर उनके साथी एवं रूम मेट स्व.शिवदत्त जी चतुर्वेदी और प्रसिद्ध गीतकार स्व. रामचंद्र द्विवेदी 'प्रदीप' जी थे। मैने अपने पिताजी के पास प्रदीप जी के गर्दिश के दिनों के अनेक पत्र देखे थे जो उन्होंने तत्कालीन 'बॉम्बे' से लिखे थे परन्तु उचित रख-रखाव के अभाव में वे छिन्न-भिन्न हो गए। मैं जब आदरणीय प्रदीप जी से मिला तो उन्होंने भी पिताजी को अपना सच्चा हमदर्द और हमराज बताया। उन्होंने दोनों की दोस्ती के कई मनोरंक किस्से साझा किये।

पिताजी समय और अनुशासन के बड़े पाबंद थे। कॉलेज का चौकीदार सवेरे गेट की तरफ देखता रहता था कि 'मास्साब' की साइकिल गेट में घुसे और वो घंटा बजाये यानी समय हो गया। एक बार खाना छूट सकता था मगर वे कॉलेज समय पर ही पहुंचा करते थे। अनुशासन के बारे मैं सुनता था कि जब वे कॉलेज कॉरिडोर में निकलते थे तो सारे कॉरिडोर में एक भी स्टूडेंट नहीं दिखलाई पड़ता था। रुआब ऐसा कि बाहर का कोई भी व्यक्ति क्लास तो क्या कॉलेज में भी बिना उनकी आज्ञा घुस नहीं घुस सकता था। बताया जाता है कि एक बार कोई दरोगा बिना प्रिंसिपल या उनकी की आज्ञा के कॉलेज में आ गया था जिसे उन्होंने इतनी जबर्दस्त डांट लगाकर बाहर निकाल दिया कि बाद में वो दरोगा जी लिखित आज्ञा लेकर ही कॉलेज में प्रवेश कर सके। पिताजी के बारे में ऐसे ही अनगिनत किस्से उनके तत्कालीन शिक्षकों और विद्यार्थियों से सुनते रहे हैं।

वे निजी ट्यूशन के बड़े खिलाफ थे। बताते हैं कि एक बार कोई कलेक्टर अपने लड़के को बंगले पर ट्यूशन पढ़वाना चाहता था परन्तु पिताजी ने साफ मना कर दिया था। यद्यपि प्रिंसिपल चाहते थे कि पिताजी उसे अंग्रेजी की ट्यूशन पढ़ा दें। बहुत से लोगों और खुद कलेक्टर ने अनुनय-विनय किया तो वे इसके लिए तैयार हो गये लेकिन दो शर्तों के साथ। वो शर्तें थीं कि एक तो कलेक्टर साहब का पुत्र हमारे घर आकर पढ़ेगा और दूसरा वे इसकी कोई फीस नहीं लेंगे। आज के दौर में तो स्कूली शिक्षकों के वेतन अपेक्षाकृत बहुत अच्छे हो गये हैं किंतु पिताजी के दौर में इतने अच्छे वेतन नहीं थे। कभी-कभी सोचता हूं कि कलेक्टर के पुत्र को ट्यूशन पढ़ाने से मना करने का साहस आज के दौर में भी शिक्षकों में नहीं मिलता बल्कि वे तो ऐसा करने के अवसर की तलाश में जरूर रहते हैं। पिताजी द्वारा उस दौर पर में दिखायी गयी निर्भीकता का ही परिणाम है कि आज भी यानी बहुत से लोग उन्हें सम्मान से याद करते हैं और जब वे अपने साथ के उनके किस्सों को साझा करते हैं और जब लोग ये पूछते हैं कि आप मैनपुरी से हो..तुम मास्साब के या भैया के बच्चे हो तो हम सभी गर्व से कहते हैं..हां, हम मैनपुरी से हैं और स्व. रामदास चतुर्वेदी जी के बच्चे हैं। (र.क्र. -869)

गुग्गल-एक महत्वपूर्ण औषधि

- दिलीप सिंकन्दरपुरिया, लखनऊ

शिशिर ऋतु के चलते ही बसंत ऋतु दस्तक देने लगती हैं, इस मौसम की मादकता से हमारा स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। शीत ऋतु में संचित कफ बसंत ऋतु में सूर्य की किरणों के प्रभाव से कुपित हो सकता हैं। अतएव कफ प्रधान एवं वात-पित अप्रधान होता है,जिसका प्रतिफल होता है कि कफ,वात-पित के साथ संयोग कर स्वास्थ में अवरोध उत्पन्न करने लगता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में गिलोय,अश्वगंधा,हल्दी, दालचीनी, एलोवेरा,गुग्गुल आदि का सेवन किया जाता है। बसंत ऋतु में लोगों में मिथ्या आहार-विहार, विरूद्ध आहार की भूमिका बढ़ जाने से कफ व्याधियों के साथ ही वातज व्याधियां भी उत्पन्न होने लगती है। अब तो डॉ लोग भी मानने लगे हैं कि प्राकृतिक पर्यावरण मे पलने वाले बच्चों की इम्यूनिटी बेहतर होती है, फलस्वरूप कोरोना काल में प्राकृतिक एवं आयुष चिकित्सा का प्रचलन काफी बढ़ गया है, आयुर्वेद में कफ, वात-पित के आधार पर ही रोगी को औषधियां दी जाती है। गुग्गल , गिलोय, अश्वगंधा जैसी औषधियां कफ, वात-पित तीनों में प्रभावी होती है। गुग्गल आयुर्वेद में इसका प्रयोग प्राचीन काल से तरह-तरह के रोगी के उपचार हेतु किया जाता रहा है।

गुग्गल का वृक्ष 4–6 फीट ऊंचा होता है, जिससे गोंद जैसा राल निकलता है,उसे ही गुग्गल के रुप में उपयोग किया जाता है, भारत में प्रमुख रूप से राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, मध्यप्रदेश में गुग्गल का उत्पादन होता है, लेकिन उत्पादन आवश्यकता से कम होने से विदेशों से आयात करना पड़ता है। भारत में दो प्रकार का गुग्गल पाया जाता है–

1.कांमिफोरा मुकुल

2.कांमिफोरा राक्सबर्घाई।

भारत के गुग्गल को इंडियन बेदेलियम (Indian Bedellium) के नाम से भी जाना जाता है।इसका रंग पीलापन श्वेत या गहरा लाल होता है, मीठी–मीठी महक होने से हवन या अग्नि में आहुति देने पर स्थान सुगंधित हो जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार गुग्गल कटुतिक्त तथा उष्ण के कारण ही कफ वात–पित नाशक होता है।

वर्तमान काल में मनुष्य अति महत्वाकांक्षा, अकेलापन, चिंता,क्रोध,भय के साथ अनिश्चितता से पीड़ित होने के कारण ही अनिद्रा, अग्निमांद्य,अर्श, रक्तविकार, भगंदर,मलावरोध आदि अनेक व्याधियां उत्पन्न हो रही है।इन व्याधियों पर प्रभावी महत्वपूर्ण औषधि है– गुग्गल,भाव मिश्र ने वर्ण भेद से पांच प्रकार बताए हैं–

1.महिपाक्ष– यह काले रंग का मनुष्य चिकित्सा में ग्राह्य है।
2.महानील– यह नील रंग का पशु चिकित्सा में ग्राह्य है।
3.कुमुद– कपिस रंग का पशु चिकित्सा में ग्राह्य है।
4.पदम– लाल रंग का पशु चिकित्सा में ग्राह्य है।
5.कनक– पीले रंग का मनुष्य चिकित्सा में ग्राह्य है।

शोधन

गिलोय या त्रिफला के काढ़े या दूध में गुग्गल को डाल दे और आग पर पकायें,जब गुग्गल गल जाए तो धीरे–धीरे ऊपर का द्रव भाग छान लें, नीचे का अनुपयोगी द्रव को छोड़ दें। फिर गुग्गल के द्रव घोल आग पर पका खूब गाढ़ाकर ले। गिलोय या त्रिफला के काढ़े या दूध इन तीनों में से एक द्रव्य गुग्गल से दोगुने परिमाण में ले, व्यवहार में चार गुणा लेकर पकाये। पकाते समय थोडा सा देशी घी मिला दें, ताकि गुग्गल जल न जाएं।

उपयोग

आयुर्वेद में गुग्गल महत्वपूर्ण औषधि है, इसका पूर्ण लाभ लेने के लिए शास्त्रोंक्त विधि से शोधित कर खूब कुटाई के बाद तैयार किया जाता है। यदि गुग्गल पानी में डालने से नीचे बैठ जाएं और इधर उधर न फैले तो पाक सिध्द माना जाता है।

विभिन्न गुग्गल कल्प एवं उनका मात्रानुसार उपयोग

1. अमृतादि गुग्गल

मात्रा 2 से 4 गोली सुबह–शाम गर्म पानी के साथ, इसके सेवन से वातरक्त, कोढ़,अर्श, मंदाग्नि, कुष्ठ, पुराना घाव, प्रमेह,आमवात, भगंदर, नाड़ीव्रण शोथ आदि रोग नष्ट होते हैं।

2.आभा गुग्गल

मात्रा 2 से 4 सुबह शाम गर्म पानी से जोड़ दर्द,मोच आना, हड्डी–पसली टूटना या चोट के कारण खून का जमना में लाभकारी आभा गुग्गल पीड़ा नाशक है।

3. एकविशंति गुग्गल

मात्रा 2 से 4 गोली सुबह शाम नीम छाल काढ़े के साथ लेने से चर्म रोग, खुजली,दाद, फोड़े–फुंसियां,रक्त विकार से कुष्ठरोग में लाभदायक है।

4. कांचनार गुग्गल

मात्रा 2 से 4गोली सुबह शाम कंचनार, वरुण एवं खैरसार छाल के काढ़े से लेने पर अपची,जख्म,सूजन, कुष्ठ, भगंदर एवं गला–नाक में गांठें बनना में भी लाभ दायक होता है।

5. कैशोर गुग्गल

मात्रा 2 से 4 गोली मंजिष्ठादि काढ़े व दूध के साथ लेने पर वातरक्त,घाव, खांसी,उदर रोग,प्रमेह,आमवात के लिए लाभदायक है।

6. गोक्षुरादि गुग्गल

1–1 गोली सुबह शाम गोखरू काढ़े के साथ लेने पर मूत्ररोग, पथरी,प्रमेह,प्रदर रोग, शुक्रदोष एवं मूत्राशय गत समस्त रोगों में लाभकारी होता है।

7. त्रयोदशांग गुग्गल

2–4 गोली सुबह–शाम गर्म पानी या दूध से लेने पर वातज शूल, गठिया, पक्षाघात,अस्थि,सन्धि,मज्जागत एवं स्नायु स्थित वातरोग में लाभकारी होता है।

8. त्रिफला गुग्गल

2–4 गोली सुबह–शाम त्रिफला काढ़े या गोमूत्र से लेने पर वातज शूल,अर्श,मलावरोध के साथ ही पुराने कब्ज में लाभकारी होता है।

9. महायोगराज गुग्गल

1–1 गोली सुबह–शाम गर्म पानी से लेने पर संधिवात, आमवात,अपस्मार, सूजन, एनीमिया, के साथ ही पुरुषों के वीर्य दोष में भी लाभदायक होता है।

10. लाक्षादि गुग्गल

2–4 गोली सुबह–शाम गर्म पानी

से लेने पर हड्डी विकार, हड्डी टूटना, धातुक्षीणता के साथ ही ह्रदय रोग में भी लाभदायक है। किसी भी रोग में कभी भी चिकित्सक की सलाह के बिना कोई औषधि नहीं लेनी चाहिए।

यह आलेख तैयार करने में मिले सहयोग के लिए आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ रजनीश खन्ना का विशेष आभारी हूं।

शाखा समाचार

हैदराबाद

मुझे यह लिखते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हैदराबाद शाखा सभा द्वारा लिए गए संकल्प का आहूत इस तरह से सुखद होगा। शाखा सभा की महिला मंडली से श्री श्रीमती बीना मिश्रा द्वारा एक प्रस्ताव रखा गया कि क्यों ना इस बार एक बड़ी राशि एकत्रित की जाए और उसे अन्नपूर्णा योजना के तहत अखिल भारतीय चतुर्वेदी महासभा को उनके पुण्य कार्य के लिए समर्पित की जाए जिससे वह उसका उचित वितरण समाज के जरूरतमंद परिवारों के लिए कर सके। इस पुण्य कार्य को करने के लिए हैदराबाद शाखा सभा ने इस प्रस्ताव को हाथों हाथ लिया और श्रीमती कीर्ति मिश्रा की अगुवाई में इसके निष्पादन में एकजुट होकर रुपए 70,001/- इकट्ठे किए। शाखा सभा उन सभी परिवारों का तहे दिल से अभिनंदन करती है जिन्होंने आगे बढ़कर अपना सहयोग प्रदान किया। शाखा सभा उन सभी कार्यकर्ताओं का भी अभिनंदन करती है जिन्होंने इस पुण्य कार्य को करने में अपना सहयोग एवं योगदान दिया। यह राशि उन दानदाताओं के नामों के साथ प्रेषित कर रहे हैं।

– **चंद्रकांत चतुर्वेदी**, अध्यक्ष

1. Nisha, Santosh & Richa Chaturvedi 2100/-
2. Deepak & Kirti Mishra - 2200/-
3. Anjali Chaturvedi (Mainpuri) 1000/-,
4. Gopal & Meena Chaturvedi 1000/-,
5. Pranab,Peeyush & Dipiti Chaturvedi - 1199/-
6. Rupa, Atul Chaturvedi - Kolkata-1000/-,
7. Krishna Kant & Rita Chaturvedi - 1000/-
8. Goonjan & Shambhavi Chaturvedi - 1000/-
9. Gitesh & Garima Chaturvedi 1000/-
10. Himanshu & Bhavana Pathak - 2100/-
11. Amar krishn & Snehlata Chaturvedi - 1100/-
12. Chitra Chaturvedi 1100/-
13. Dhruv & Shalini Chaturvedi 1100/-
14. Mohit - Neha Chaturvedi 1100/-
15. Deepak & Sarika Chaturvedi 1000/-
16. Avanindra Kant & Aarti Chaturvedi- 1100/-
17. Asha,Pranab & Suchita Chaturvedi 5000/-
18. Krishan kant Chaturvedi & Neelam - 5100/-
19. Nishit & Molly Chaturvedi - 1001/-
20. Suyash & Neelam Pathak 1100/-
21. Suchit Pathak & Bhumika 1000/-
22. Gyanesh & Aparna Chaturvedi 1500/-
23. Mandavi, Sanjeev & Gauri Chaturvedi 1100/-
24. Ajit & Abha Chaturvedi 1100/-
25. Bhartendu & Neeta Chaturvedi - 1100/-
26. Beena Chaturvedi 2100/-
27. Upendra & Shachi Chaturvedi 1000/-
28. Ramesh Chandra & Mamata Chaturvedi (Chacha company) 1100/-
29. Chandrakant, Chitra, Sudeep & Priyanka Chaturvedi 2100/-
30. Subodh Chaturvedi 2100/-
31. Abhishek & Vandana Chaturvedi - 1100/-
32. Suman Chaturvedi - Mathura 1100/-
33. Chandra Chaturvedi 1100/-
34. Krishna - Sobha Chaturvedi 1100/-
35. Sudhir & Suhas Chaturvedi 1100/-
36. Vibha Chaturvedi 1100/-
37. Utpal & Ritu Chaturvedi - 1001/-
38. Ajay & Aparna Pandey - 5100/-
39. Ritesh & Deepa Chaturvedi - 2100/-
40. Ramakant, Kshama, Praveen, Neeta Chaturvedi 5600/-
41. ShivKumar - Seema Chaturvedi - 2100/-
42. Animesh & Mayuri Chaturvedi - 1000/-

कुल सहयोग राशि 70,001=00

-0-

कानपुर

दिनांक 25 दिसंबर 2021 को बाबू ओंकारनाथ चतुर्वेदी धर्मशाला साकेत नगर कानपुर में प्रातः 10:00 से 2:00 तक मेडिकल कैंप का आयोजन श्री माथुर चतुर्वेदी सभा के तत्वाधान में चिकित्सा प्रकोष्ठ के द्वारा किया गया था। जिसमें दांत,आंख, मधुमेह ,ब्लड प्रेशर, ब्लड ग्रुप जैसी महत्वपूर्ण बीमारियों का परीक्षण डॉ अजय खन्ना के नेतृत्व में कुशल डॉक्टरों द्वारा किया गया। समाज व अन्य की भी इस मेडिकल कैंप का भागीदारी रही। मेडिकल कैंप में समाज के वरिष्ठ कैलाश चंद जी, इच्छू

भाई साहब, स्वतंत्र प्रकाश जी, सभा के संरक्षक अविनाश भैया, धीरेंद्र भाई साहब व धर्मशाला संयोजक chunna भैय्या , सभा

के अध्यक्ष सत्येंद्र जी चिकित्सा प्रकोष्ठ के संयोजक अपनी सहयोगी टीम के साथ उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाया। सभा के पदाधिकारी एवं सदस्य भी मौजूद रहे। कानपुर सभा सभी का आभार व्यक्त करती है और भविष्य में होने वाले प्रोग्रामों में सहयोग की अपेक्षा रखती है।

प्रवेश चतुर्वेदी महामंत्री श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर

लखनऊ

होटल विश्वनाथ में लखनऊ मंडल की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक रविवार 16 जनवरी 22 को सौहार्द पूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। सर्व प्रथम संरक्षण गण ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। फिर सुबोध जी ने मंगलाचरण किया। इसके बाद दिलीप सिकंदरपुरिया ने अपनी चिर-परिचित अंदाज में मंच संचालन किया। संरक्षक गण के माल्यार्पण के साथ ही शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। संरक्षक गण महेशजी,पदम भाई, अखिलेश जी, शैल जी,पुत्तन जी ने नवगठित कार्यकारिणी को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दी। इसके बाद नवनिर्वाचित कार्यकारिणी में सभी का परिचय दिया गया।

सलाहकर- सर्वश्री मेजर जनरल अजय जी, दिनेश जी, संतोष जी, आनंद जी,यदुवेश जी।।

अध्यक्ष-विपिन जी,मंत्री-शिशिर जी, कोषाध्यक्ष-पूनम जी, उपाध्यक्ष - पंकज जी, प्रदीप जी, राजीव जी व अतुल जी ।सहमंत्री- निखिल जी, प्रफुल्ल जी,अजय जी,संजय जी खेलकूद प्रभारी-स्वर्णेश जी, संस्कार जी, लेखा परीक्षक-नीरज जी ,गौरव जी सम्पादक-दिलीप सिकंदरपुरिया, सुबोध जी। कार्यकारिणी सदस्य-डॉ. सुजीत जी, नवीन जी, मृगेंद्र पाण्डेय जी, राकेश जी, अंशुल जी दिवाकर जी,संजय जी, राजीव जी, नीरज जी, दिवस जी

विशेष आमंत्रित- ललित जी, विनय जी, फणींद्र नाथ जी, नरेंद्र जी, हरीश जी, मंजुल जी, नितिन जी, नमन जी। सदन ने तालियों की गड़गड़ाहट से नवगठित कार्यकारिणी का अभिनंदन किया। मंत्री शिशिर जी ने एजेंडा पर बात करते हुए वर्ष के आगामी कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए आमसभा की बैठक, खेलकूद, पिकनिक, होली मिलन की चर्चा की। फिर ललित जी एवं यदुवेश मिंटू जी ने मंडल के मेडिकल राहत कोष व्यवस्था की विस्तृत प्रस्तुति दी। उपाध्यक्ष प्रदीप जी, पंकज जी,

राजीव जी के साथ ही पुत्तन जी, सुबोध जी, दिवाकर जी, आनंद जी,मंजुल जी, प्रफुल्ल जी ने भी अपने विचार सदन में पेश किए। अंत में अध्यक्ष विपिन जी ने सभी संरक्षकों , पदाधिकारियों के साथ ही सभी कार्यकारिणी सदस्यों विशेषकर बाराबंकी से पधारे डॉ. सुजीत का आभार प्रकट करते हुए बैठक की समाप्ति की घोषणा की, उनके अनुरोध पर सदन ने तालियों के साथ नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष पंकज जी, अजय जी एवं नमन जी को उचित स्थान एवं खान- पान व्यवस्था के लिए धन्यवाद दिया।

- शिशिर चतुर्वेदी,मंत्री एवं संजय चतुर्वेदी, सहमंत्री

समाज समाचार

दिनाँक 14/12/2021 को दामोदर इंटर कॉलेज, होलीपुरा आगरा में माननीय सतीश चंद्र चतुर्वेदी (पूर्व मंत्री, महाराष्ट्र सरकार) ने भ्रमण किया। आपके आगमन पर विद्यालय के प्रधानाचार्य रमाकांत शर्मा द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया। सतीश जी ने अपने संबोधन में कहा कि मुझे इस विद्यालय में आने के पश्चात परम गौरव व हर्ष की अनुभूति हुई है। मैं अपनी श्रद्धा व सम्मान स्व. दामोदर दास चतुर्वेदी के प्रति व्यक्त करता हूँ। दामोदर इंटर कॉलेज होलीपुरा में अध्ययन के दौरान मेरे मन में प्रबल इच्छा थी कि मैं शिक्षा के क्षेत्र में उत्थान हेतु कार्य करूँ। आज परमपिता परमात्मा की कृपा से मेरे अनेक शिक्षण संस्थान है। जिनमें इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलिटेक्निक कॉलेज व फार्मेसी कॉलेज प्रमुख हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि बिना कर्म के कुछ प्राप्त नहीं होता। अंत में उन्होंने कहा कि विद्यालय के प्रधानाचार्य की अनुशंसा पर दो जरूरतमंद और मेधावी छात्रों को प्रतिवर्ष निशुल्क शिक्षा इंजीनियरिंग एवं पॉलिटेक्निक कॉलेज में दूँगा। उन्होंने इस विद्यालय के ऋण से मुक्त होने हेतु विद्यालय भवनों के जीर्णोद्धार हेतु सहयोग की इच्छा भी व्यक्त की।

- अविनाश कक्षा 12 विज्ञान वर्ग

समाज समाचार

* श्री शिव चतुर्वेदी ने अपने पुत्र स्व. श्री उमेश चतुर्वेदी की द्वितीय पुण्य तिथि पर अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ रुपये 8000/- प्रदान किये। (र.क्र.-812)
* कुशाग्र चतुर्वेदी सुपुत्र सुचित चतुर्वेदी (मानपाड़ा आगरा/ ग्वालियर) की नियुक्ति मालवीय नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया एमएनआईटी जयपुर में असिस्टेंट रजिस्ट्रार के पद पर हुई है। बधाई।

* हमारे मैनपुरी परिवार में भी कुछ लोगों ने अन्नपूर्णा सहायता में दिया है। लिस्ट इस प्रकार है 1. श्री नवीन-उर्वशी जी मुंबई 1100/-, 2. श्री दिलीप-वसुधा एवं शुभ्रा 3000/, 3. श्रीमती नीरजा जी 1100/-, 4. श्रीमतीअनीता जी पिनाहट 1100/-, 5. श्रीमती मालती जी प्रदीप-रागिनी प्रखर-अंजली सोम्या 1100/- टोटल रुपए 7400/- बीना मिश्रा (र.क्र.856)
* आप लोगों को सूचित करते हुए बड़ा हर्ष महसूस हो रहा है कि हम कंपिल परिवार की बहुओं और बेटियों ने अन्नपूर्णा सहयोग राशि में 11000/- रुपये संक्रांति अन्नदान हेतु महासभा को एक छोटी-सी रकम भेंट की है। दान करे से बढ़त है, बिन बाँटे घट जात। दोनों हाँथों देत हैं, रंच मात्र ना मान। दानवीरता आपकी, जग में है विख्यात। दान धर्म जो ना किया, जीवन है बेकार। कंपिल परिवार (र.क्र.855)
* श्री अभय कुमार चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/एटा) ने अपने पूजनीय पिताजी स्वर्गीय श्री परमानंद चतुर्वेदी(फिरोजाबाद) की 41 वी पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में महासभा सहायतार्थ 1100/- रुपये प्रदान किए। (र.क्र. - 850)
* चि. तनुज चतुर्वेदी पुत्र श्री कौशल किशोर चतुर्वेदी एवं श्रीमती रमा चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्री लखपति राय चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती मालती देवी चतुर्वेदी (फरौली/भोपाल) का शुभ विवाह सौ. पूर्वा चतुर्वेदी सुपुत्री श्री हरिमोहन चतुर्वेदी एवं श्रीमती नीरज चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. श्री ओम प्रकाश चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती कुमोदिनी चतुर्वेदी (पिनाहट/भोपाल) के साथ 13-12-21 को भोपाल में संपन्न हुआ। इस अवसर पर पिता कौशल किशोर चतुर्वेदी ने 1101/- कुलदेवी देवी हेतु एवं पुत्र चि. तनुज चतुर्वेदी की पत्रिका पांच वर्षीय एवं महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क 1501 प्रदान किए। (र.क्र.841)
* चि.सानिध्य चतुर्वेदी उम्र 12 साल सुपौत्र स्व. श्री रामकृष्ण एवं श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी सुपुत्र श्री तरुण एवं श्रीमती शिखा चतुर्वेदी मैनपुरी/कानपुर ने 25-26दिसम्बर 2021 को अहमदाबाद/गुजरात में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में भारत ,नेपाल ,श्री लंका ,बांग्लादेश आदि देशों के खिलाड़ी भी शामिल हुए।इस अवसर पर उनके माता-पिता ने 501रुपये अन्नपूर्णा योजना में दिये।

* **'स्मृतियाँ और कृतियाँ ' पुस्तक का विमोचन :** पूर्व पत्रकार एवं साहित्यकार (सेवानिवृत क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय) स्व. श्री तुलसी राम चतुर्वेदी (चंद्रपुर) द्वारा लिखित पुस्तक ' स्मृतियाँ और कृतियाँ ' का विमोचन

5 दिसम्बर, 2021 को जयपुर में किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री धर्म गोपाल चतुर्वेदी (भरतपुर/चंद्रपुर) ने की। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं श्री तुलसी राम जी के प्रगाढ़ मित्र डॉ. देवेन्द्र भटनागर जी रहे। पुस्तक के संपादक श्री बृजेश चतुर्वेदी (भरतपुर) द्वारा पुस्तक पर दो शब्दों से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर समारोह अध्यक्ष श्री धर्म गोपाल चतुर्वेदी एवं मुख्य अतिथि डॉ देवेन्द्र भटनागर के साथ-साथ वरिष्ठ इतिहासकार व लेखक डॉ. सुरेश मिश्रा, प्रो. गीता चतुर्वेदी, श्री अरुण चतुर्वेदी, कविवर वरुण चतुर्वेदी, मालवीय नगर सेक्टर 8 विकास समिति के अध्यक्ष श्री कटारा जी, श्री तुलसी राम जी के सुपुत्र पीयूष एवं सुपुत्री मधु ने उनके साथ बिताये क्षण एवं अनुभव साँझा किये।

दीपक चतुर्वेदी ने उनके नाम को सार्थक करती अपनी एक मौलिक कविता प्रस्तुत की। श्रीमती आशा चतुर्वेदी, सेवानिवृत विभागाध्यक्ष (इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय) डॉ. उमेश चतुर्वेदी, श्री उपेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, परिवार एवं समाज के अन्य प्रबुद्धजन काफ़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का सुचारू रूप से संचालन सपन मिश्रा एवं आभार प्रवीण चतुर्वेदी द्वारा व्यक्त किया गया। इस अवसर पर प्रवीण जी ने चतुर्वेदी चंद्रिका सहायतार्थ 1100/-

प्रदान किये। आभार। (र.क्र. 881)

* दैनिक समाचार पत्र पत्रिका में आयोजित हिंदी हैं हम अभियान के अंतर्गत हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता में श्रीमती उषा चतुर्वेदी लघु कथा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता 2020 जून में प्रविष्टियां मांगी गई थी उसका परिणाम 14 जनवरी 2022 को आया।

* **पुस्तक समीक्षा : पूर्ण स्वास्थ्य की खोज (एक यात्रा) :** एयर वाइस मार्शल अशोक चतुर्वेदी, लखनऊ की पांच खंडों में प्रकाशित ज्ञानवर्धक पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। एयर वाइस मार्शल अशोक चतुर्वेदी किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज लखनऊ से एम. बी.बी.एस. करने के पश्चात सशस्त्र सेना, चिकित्सा में सेवा प्रारंभ की। लोक स्वास्थ्य क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त करने और सेना में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए सन 2002 में अवकाश प्राप्त किया। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को एक पुस्तक – पूर्ण स्वास्थ्य की खोज इस यात्रा में समेटने का प्रयास किया है। यह पुस्तक पांच खंडों में है व हिंदी भाषा में है। पुस्तक में मानव के वैश्विक पृष्ठभूमि में रखते हुए उसे जीवन यात्रा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। और उसके स्वास्थ्य को प्रभावित करते हुए उसके स्वास्थ्य को उच्चतम स्तर पर ले जाने संबंधित प्रयास है। पाठकों को मदद करने

के लिए सरलीकृत भाषा में पठनीय सामग्री संकलित है। यह पुस्तक मानव जीवन यात्रा के निम्न मध्यवर्ती उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होगी यह पुस्तक निम्न पांच खंडों में विभाजित है। जिनमें प्रथम खंड ब्रह्मांड में पृथ्वी की उत्पत्ति की रचना की कथा। उसमें जीवों का क्रमिक विकास व इंसान के आपसी संबंध। द्वितीय खंड में मानव शरीर की रचना व कार्य विधि का परिचय व स्वस्थ रहने के लिए जीवनशैली, तृतीय खंड में वातावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव, चतुर्थ खंड में रोगों के कारण व उनके बचाव, पंचम खंड में आध्यात्मिक योग संस्कृति व व्यवहारिक समाज और स्वास्थ्य यह पुस्तक बहुत ही ज्ञानवर्धक वह समाज उपयोगी सिद्ध होगी। चिकित्सा शिक्षा/ नर्सिंग के विद्यार्थियों के लिए यह शोध परक पुस्तक बहुत सहयोगी सिध्द होगी। मानव जीवन में स्वास्थ्य के उच्चतम स्तर को पाने के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी। यह पुस्तकों का संग्रह मानवीयता के लिए बहुत उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।
– संपादक

* स्वर्गीय श्री भूपेन्द्र नाथ चतुर्वेदी होलीपुरा/इंदौर एवम स्वर्गीय श्रीमती सुधा चतुर्वेदी (मैनपुरी–होलीपुरा/इंदौर) की स्मृति में उनके बच्चों द्वारा अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/– रूपए प्रदान किये। (र.क्र.–876)

* श्री बृजभूषण चतुर्वेदी(बीबीसी),इंदौर फिल्म संसार एवं पत्रकारिता जगत में एक सम्मानीय नाम है। जिन्होंने फिल्मों पर बहुत काम किया है। लोकप्रिय कवि सत्यनारायण सत्तन

ने बीवीसी जी की बायोग्राफी का विमोचन करते हुए कहा कि बी.बी.सी. जी की आत्मकथा जिंदगी की बचपन से बुढ़ापे तक की बातें कहती है। जो हमारा मार्गदर्शन करती है। देशभर में उनको प्राप्त करीब 80 सम्मान के बारे में ये आत्मकथा कहती हैं। जहां इसमें इनकी अनेक नायाब जानकारियां उनके जीवन की झाँकी है। वही उसमें वे 50 से अधिक नायाब पत्र हैं, जो उनके पास देश के विशिष्ट हस्तियों के हस्ताक्षर युक्त पत्रों का संग्रहण है। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कवित्री डॉ. मोहनी जी भी उपस्थित थी। उन्होंने भी आत्मकथा की भूरी भूरी प्रशंसा की।

* श्रीमती मीना चौबे पत्नी श्री शतदल चतुर्वेदी उप–प्रधानाचार्या के पद पर राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान झांसी से पांडुनगर,कानपुर में स्थानांतरित।

* चि. अच्युत सुपौत्र स्व. श्रीमती राजकुमारी एवं स्व. श्री विनोद चंद्र चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती सुमति – श्री अजय चतुर्वेदी (कोटा) का शुभ विवाह सौ. भूमिका सुपौत्री श्रीमती प्रभा चतुर्वेदी – स्व. श्री विनोद चतुर्वेदी, सुपुत्री श्रीमती ज्योति – श्री राजीव चतुर्वेदी के साथ सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री अजय जी ने पत्रिका सहायतार्थ 1100/– महाविद्या देवी मंदिर सहायतार्थ 1100/– प्रदान किया। (र.क्र. 825)

* चि. शोभित सुपौत्र स्व. देवेंद्र नाथ (लल्ला) जी – स्व. शैलजा जी चतुर्वेदी सुपुत्र राजेश (गुडडू) – श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी (कछपुरा/ कोलकाता) का शुभविवाह सौ. अंजली पुत्री श्री हेमंत – श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता) दिनाँक 26 अप्रैल 2021 को सानन्द संपन्न हुआ। सौ. तान्या चतुर्वेदी सुपौत्री : स्व. देवेंद्र नाथ (लल्ला) – स्व. शैलजा चतुर्वेदी पुत्री राजेश (गुडडू) – श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी (कछपुरा/कोलकाता) का शुभविवाह चि. शुभम सुपुत्र श्री अवधेश चंद्र (शास्त्री जी) – श्रीमती रेखा चतुर्वेदी (आगरा/मथुरा) के साथ दिनाँक 01 दिसंबर 2021 को सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 1002/– प्रदान किये।। (र.क्र.–833)

शोक समाचार

* डॉ उमेश चंद्र जी (मैनपुरी/लखनऊ) का स्वर्गवास 82 वर्ष की आयु में 28 दिसम्बर 21 को लखनऊ में हो गया। आप लखनऊ मेडिकल कॉलेज से रिटायर्ड एच ओ डी थे। आपको विज्ञान के क्षेत्र में भी कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।
* श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (एडवोकेट) पुत्र स्वर्गीय श्री ओमकार नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी/दतिया) का स्वर्गवास 83 वर्ष की आयु में दिनांक 28 दिसंबर 2021 को दतिया में हो गया। स्व. श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी ख्यातिमान वरिष्ठ अधिवक्ता के साथ ही आजीवन पत्रकार, समाजसेवी और राजनेता रहे। वे लोकतंत्र सेनानी संघ जिला दतिया के अध्यक्ष थे।
* श्री अरुण कुमार (मैनपुरी/नौयडा) का स्वर्गवास दिनाँक 4 जनवरी 2022 को हो गया।
* श्री प्रदीप चतुर्वेदी, मन्नू पुत्र स्व. रमेश जी (होलीपुरा/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 05/01/2022 को लखनऊ में हो गया।
* श्रीमती कामिनी पत्नी स्व. ब्रजेंद्रनाथ चतुर्वेदी (मथुरा/बड़ौदा) का स्वर्गवास दिनाँक 15 जनवरी 2022 को बड़ौदा में हो गया।
* श्री गजेन्द्र नाथ पुत्र स्व. रामचंद्र चतुर्वेदी (होलीपुरा/रांची) का स्वर्गवास 68 वर्ष की आयु में दिनाँक 10/01/2022 को रांची में हो गया।
* श्री सतीश चंद्र चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 13.01.2022 को आगरा में हो गया।
* श्रीमती जगदम्बा पत्नी स्व.श्री हरीश चंद्र चतुर्वेदी (चंद्रपुर/डडवाड़ा, कोटा) का स्वर्गवास दिनाँक 14 जनवरी 2022 को कोटा में हो गया।
* श्री निशीथ चतुर्वेदी पुत्र स्व. ओम प्रकाश चतुर्वेदी (चंद्रपुर/डडवाड़ा,कोटा) का स्वर्गवास दिनाँक 02 जनवरी 2022 को कोटा में हो गया।
* सुश्री गीता चतुर्वेदी पुत्री स्व. श्री ब्रजपाल नाथ चतुर्वेदी (कंपिल/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 8 जनवरी 2022 को 69 वर्ष की आयु में अपने भाई गोविंद जी के पास लखनऊ में हो गया।
* श्रीमती नीलम चतुर्वेदी पत्नी श्री अनिल कुमार चतुर्वेदी (से.नि. जिला न्यायाधीश) (कमतरी/इलाहाबाद/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 7 जनवरी 2022 का भोपाल में हो गया।
* श्रीमती रजनी चतुर्वेदी पत्नी स्व. हरी किशोर चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास) का स्वर्गवास दिनाँक 16.01.22 को हो गया।
* एयर कमोडोर (अवकाश प्राप्त) अशोक कुमार चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.निर्मल चंद्र चतुर्वेदी (कछपुरा/नोएडा) का स्वर्गवास नोएडा में दिनाँक 17.01.2022 को हो गया।
* श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी पत्नी श्री सुभाषचंद्र चतुर्वेदी, 'सुब्बी' (कछपुरा/ कानपुर/ लखनऊ) के स्वर्गवास दिनाँक 18/01/2022 को लखनऊ में हो गया।
* श्री हर्ष गोविंद चतुर्वेदी पुत्र स्व. महेश चतुर्वेदी (कमतरी/पेरिस) का स्वर्गवास दिनाँक 15 जनवरी 2022 को पेरिस में हो गया।
* श्रीमती शशी चतुर्वेदी पत्नी स्वर्गीय शिव कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/ उज्जैन) का स्वर्गवास 72 वर्ष की आयु में उज्जैन में दिनांक 18.01.22 को हो गया।
* श्री शशिकांत चतुर्वेदी (सिकन्दरपुर/कानपुर/मेरठ) का स्वर्गवास दिनाँक 20 जनवरी 2022 को दिल्ली में हो गया।
* श्री उपदेश चतुर्वेदी पुत्र स्व. कलाधर प्रसाद चतुर्वेदी (मैनपुरी/वाराणसी) का स्वर्गवास दि.19.1.2022 को वाराणसी में हो गया।
* श्रीमती रम्भा (मोहिनी) चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्रवण कुमार चतुर्वेदी (फिरोजाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 21 जनवरी 2022 को लगभग 90 वर्ष की आयु में फिरोजाबाद में हो गया।
* श्रीमती कुमुद मिश्रा पत्नी स्व. जितेन्द्र नाथ मिश्रा, टेस्ट्रो (काशी भवन जयपुर) का स्वर्गवास 19/01/2022 को जयपुर में हो गया।
* श्रीमती निधि पत्नी श्री विकास चतुर्वेदी (फरौली) का स्वर्गवास 40 वर्ष की अल्पआयु में दिनाँक 23/01/2022 को हो गया।
* श्री हरीश नाथ चतुर्वेदी पुत्र स्व श्री विट्ठल नाथ जी (मथुरा) का स्वर्गवास दिनाँक 26 दिसम्बर 2021 को मथुरा में हो गया।
* श्री प्रभाकर चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्याम सुन्दर चतुर्वेदी (कायमगंज) का स्वर्गवास दिनाँक 24 जनवरी 2022 को कायमगंज में 76 वर्ष की आयु में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

Bharatgas
Bharat Petroleum
COOK FOOD. SERVE LOVE.

प्रकृति के प्रति मन में सम्मान और हृदय में प्यार तो 'विज्ञान' बनेगा मानवता के लिए उपहार..

विज्ञान, जो हमारे लिए वरदान है,
इसी विज्ञान के अनियंत्रित उपयोग से प्रकृति को गहरा नुकसान हुआ है,
जिसके कारण आज हम एक नहीं बल्कि कई प्राकृतिक
आपदाओं का सामना कर रहे हैं।

आओ, विज्ञान का समझदारी से उपयोग करें,
इसे स्वयं और देश के लिए एक ताकत बनाएं!

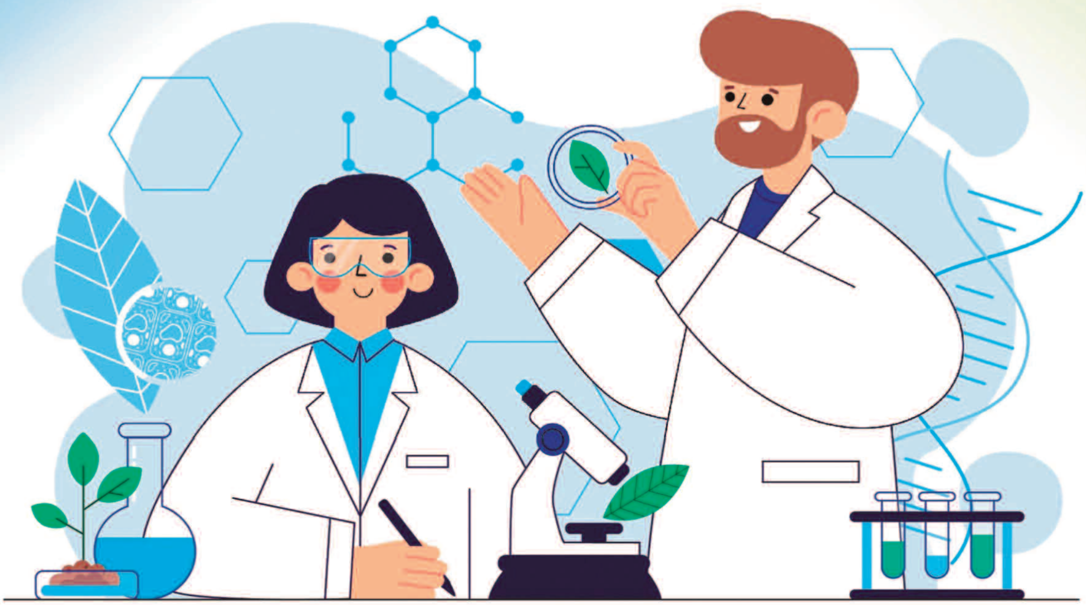

२८ फरवरी

'राष्ट्रिय विज्ञान दिवस' के अवसर पर
रेखा गैस की ओर से शुभकामनाएं।

रेखा गॅस एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com

www.malhar.org

(र.क्र. 2022/880)

श्रद्धांजलि

जन्म
18.03.1938

देव लोक गमन
27.12.2021

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी (टी.एन. चतुर्वेदी)

वरिष्ठ अधिवक्ता एवं पूर्व अध्यक्ष जिला अधिवक्ता संघ, पत्रकार संघ, केशव बाल विकास समिति
एवं जिलाध्यक्ष लोकतंत्र सेनानी संघ दतिया (म.प्र.), समाजसेवी, स्वतंत्र पत्रकार.

"सिद्धांतों पर अडिग रहकर जिन्होंने ना छोड़ा कभी अपने आदर्शों और अपनों का साथ,
ऐसे ही थे-हम सबके शक्तिपुंज, ओजस्वी वक्ता, लोकतंत्र रक्षक, कलम और वाणी के धनी,
लोकहित में जीवनभर संघर्षरत रहने वाले

परम श्रद्धेय श्री त्रिलोकीनाथ

"आपको न भूल पाऐंगे, आपकी बातें, यादें और आपके साथ बिताए पल,
हर क्षण याद आऐंगे और आपकी मौजूदगी को निरंतर जीवन्त बनाऐंगे।"

पत्नि : श्रीमती आशा चतुर्वेदी
(प्रथम महिला पार्षद, नगर पालिका परिषद दतिया)
पुत्रियां-दामाद - एड. निवेदिता-मनोज, नन्दिता-अशोक, डॉ. अणिमा-अंकुर,
पुत्र-पुत्रवधु- त्रिदेव-कीर्ति, नवेन्दु-प्राजक्ता, अनुव्रत-सुलभा
(क्षीरजा, क्षितिशा, अद्विता, अक्षदा, अनिका, जॉय)
निवास : रेंज ऑफिस के पास, दतिया (म.प्र.)
मो. नं. : 8787208763 (निवेदिता), 7974320313,
(त्रिदेव), 9407300228 (नवेन्दु)

(र.क्र. 2022/871)

श्रद्धा सुमन

स्व. श्री बल्ली राम चौबे
(पुत्र स्व. श्री कुंदन लाल चौबे)
(सोतियाना / मैनपुरी)

स्व. श्रीमती जुमना देवी
(पत्नी स्व. श्री बल्ली राम चौबे)
(सोतियाना / मैनपुरी)

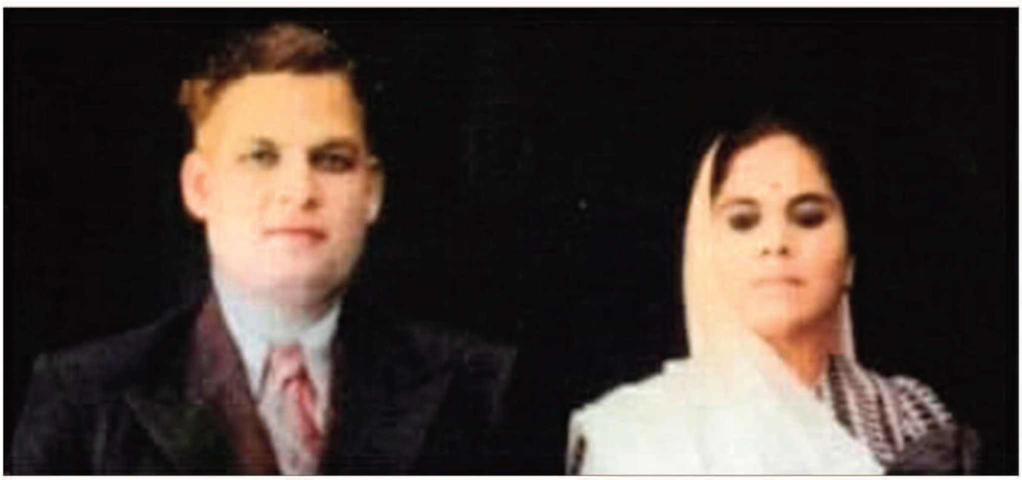

स्व. श्री रामदास चतुर्वेदी (पुत्र स्व. श्री बल्ली राम चौबे) एवम स्व. श्रीमती माधुरी देवी चतुर्वेदी (मैनपुरी)

स्व. श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
(पुत्री स्व. श्री रामदास चतुर्वेदी)
पत्नी श्री गोपाल किंकर चतुर्वेदी (आगरा)

स्व. श्रीमती प्रतिभा चतुर्वेदी
(पुत्री स्व. श्री रामदास चतुर्वेदी)
पत्नी स्व. श्री उमेश चतुर्वेदी (जयपुर)

स्व. श्रीमती अनुराधा चतुर्वेदी
(पुत्री स्व. श्री रामदास चतुर्वेदी)
पत्नी श्री पियूष कुमार चतुर्वेदी (आगरा)

श्रद्धानवत

राजीव रंजन – चारूलता (कनाडा) पीयूष कुमार (आगरा) अम्बुज कुमार – राजेश्वरी (मुंबई)	गोपाल किंकर चतुर्वेदी (आगरा) नलिनी – पुष्पेंद्र (लखनऊ)

पीयूष चतुर्वेदी,303 आई–2 नील फ्लोरेंस सिकंदरा, आगरा – 282001, मो.: 8057081679

(र.क्र. 2022/869)

With Best Compliments From

HARIOM
TRADING COMPANY

Food Grain Merchant

Kapas

Tuwar Dal

Soyabean

Sunil Kannawar
Nitin Kannawar
Kamlakar Kannawar

Mob. : 9158109110, 9422109110

At - Shivni, Tah. Kinvat,
Dist. Nanded (M.S.)

(र.क्र. 2022/878)

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. टीका शंकर चतुर्वेदी (भड़योले) एवम स्व. विमला चतुर्वेदी

(स्वर्गवास : 14.02.2019) - (स्वर्गवास : 25.02.2015)

(फरौली / गाजियाबाद)

अब पता चलता है कि जिम्मेवारियों का बोझ, कितना भारी है, खुद से ज्यादा अपनों की खुशियाँ प्यारी हैं।
दौड़ाने पड़ते हैं कदम पकड़ने को जिंदगी की रफ्तार, आज गुजर रहा है और कल की तैयारी है।
आपकी मजबूरियों का अब मुझे एहसास होता है, दुनिया होती है मतलबी और घर का हर शख्स खास होता है।
माँ के बाद पिता ही समझता है खामोशी औलादों की, मुश्किलों से बचाने के लिए पिता हिम्मत की दीवार होता है।
हर डांट में प्यार जो रहता था, वो याद बहुत अब, आता है, हर बीता लम्हा अब तो बस, आँखों में आंसू लाता है।
तस्वीर बसी है दिल में जो, जीने का हौसला देती है, इसी वजह से बस अब तो, ये वक्त गुजरता जाता है।

श्रद्धावनत

पुत्र : लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी
पुत्र - पुत्रवधु : मनीष - निधी चतुर्वेदी
पुत्री - दामाद : राखी - अनूप चतुर्वेदी
पौत्र : दीपांशु, सौमित्र,
पौत्री : सिद्धी,
धेवती : हर्षिता

निवास :
३०१, टॉवर-१७, गुलमोहर गार्डन,
राज नगर एक्सटेंशन
गाजियाबाद - २०१०१७ (उ.प्र.)
मो. : 9312221747
9999944871, 9311365602

(र.क्र. 2022/870)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' फरवरी 2022

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

(र.क्र. 2022/746) 4/12